



स्वरम् Swararam



Delhi College of Arts & Commerce

(University of Delhi)

Netaji Nagar, New Delhi – 110023

स्वर्म् SWARAM

2021-22

COMMITTEE MEMBERS

Dr. Neelam Yadav

Dr. Vinita G. Chaturvedi

Dr. Smita Banerjee

Prof Shalini Saksena

Prof. D.A.P. Sharma

Dr. Sanjeeb Kumar

Prof. Neeru Kapoor

Dr. Bijiya Thakur

Dr. Rittvika Singh

Dr. Rashmi Rawat

Mr. Sarthak Gupta

DELHI COLLEGE OF ARTS & COMMERCE

UNIVERSITY OF DELHI

NETAJI NAGAR

NEW DELHI-110023

INDIA

PHONE No: 011-24109821

FAX No: 011-26882923

EMAIL: PRINCIPALDCAC@GMAIL.COM

TABLE OF CONTENTS

1. PRINCIPAL'S MESSAGE	3
2. MESSAGE FROM THE EDITORIAL TEAM	4
3. HINDI POETRY	5
4. HINDI PROSE	7
5. ENGLISH SHORT STORIES	11
6. ENGLISH POETRY	14
7. ENGLISH ARTICLES	19
8. TRANSLATIONS	33
9. MAKTUB ENTRIES	35
10. ANECDOTES: COLLEGE ACTIVITIES	37
11. ANNUAL REPORTS	42
12. PHOTOGRAPHY	72
13. EDITORIAL TEAM	
14. CALL FOR WRITE-UPS	

*All the images procured from the Internet used in the magazine are copyright-free and labelled for reuse with modifications.

*All attempts have been made to check for plagiarism, and the final responsibility regarding any future plagiarism charges shall be with the individual contributors.

FROM THE PRINCIPAL'S DESK



I congratulate the editorial board of Swaram, the college annual magazine, for bringing out this edition. It is especially noteworthy as it marks a return to normalcy after two years of online teaching-learning activity. I take immense pleasure in presenting this magazine to you, my dear students, and I hope you enjoy it as much as our students and teachers did in bringing it together.

This magazine is a photo album and provides a platform to the students to showcase their creative and artistic talents through fictional writing as well as artwork, photography, and editing and proof reading, during the various stages of preparation of Swaram. The magazine also offers a snapshot into the rich cultural and extracurricular activities conducted by various departments, committees, and groups in the college over the course of the academic year.

I extend my congratulations to the students and the faculty in the editorial team for their unrelenting hard work and sincere efforts in bringing out this issue of the college magazine. I hope that when students peruse Swaram, they too will be inspired and motivated to submit their entries for the next edition.

I suggest that we strive to get e-ISSN number for the magazine to make it accessible online as well.

My best wishes to the entire editorial team for future endeavors.

PROF. RAJIV CHOPRA
PRINCIPAL

MESSAGE

FROM THE EDITORIAL TEAM

“It was the best of times, it was the worst of times”

The last two years have been testing times for all of us: WHO declared COVID-19 a pandemic; and, it has not effaced completely. The virus has however, prepared us to live and survive the worst of the days. We present to you the 2021-22 edition of Swaram, the Student's Magazine of Delhi College of Arts & Commerce, with a similar hope – just as we have overcome the worst of the pandemic, so will we triumph over other challenges we will face in the future. Swaram has always witnessed a huge participation by the students of DCAC across the different courses and batches. They have enthusiastically contributed write ups, fictional pieces and art work to this edition as well. Along with these, life at DCAC, lockdown, stock market, economy, translations, literature, events and activities organised across the departments and various committees of the college are covered in this issue.

The year 2022 marks the 75 year of Indian Independence, and the entire nation is celebrating Azadi ka Amrit Mahotsav with gusto and enthusiasm. This edition of Swaram is our homage to the warriors of the Freedom Movement, the trials and tribulations that have brought us here today, and, an exploration of what it means to be 'free' in an independent India. The impact of the lockdown and COVID-19 were central themes in the students' minds last year; and, this was reflected in the 2020-21 edition of Swaram. These issues find mention in this edition as well; however with a markedly different tone. The predominant mood is not of despair and confusion, instead it is one of triumph and celebration. A hope that 'we shall overcome this too' prevails in the writings in this edition.

Social Justice Week, organized by the Ambedkar-Phule Study Circle, was celebrated for the first time this year. This issue dedicates a special section to the events and activities organized as part of this celebration.

We hope that you enjoy this edition as much as we did in presenting it to you. With this hope, we wish you all a happy year ahead.

Editorial Board
Swaram

यह सबसे सुंदर समय था, यह सबसे बदतर समय था
पिछले दो साल का समय हम सब के लिए कठोर इम्तहान का समय रहा। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना – 19 को महामारी घोषित किया। उसका खतरा अब तक पूरी तरह टला नहीं है। मगर संकट की इस अवधि में इससे जूझना और उबरना हमने सीख लिया है। इस उम्मीद के साथ हम दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स की विद्यार्थी पत्रिका स्वरम का 2021-22 अंक प्रस्तुत कर रहे हैं कि जिस संवेदना के साथ महामारी की विपदा को हमने शिकस्त दी, वैसे ही भविष्य में आने वाली चुनौतियों को भी पार करते रहेंगे। स्वरम को हमेशा से प्रत्येक विभाग के विद्यार्थियों का व्यापक सहयोग मिलता रहा है। इस अंक के लिए भी आलेख, कथात्मक एवं कथेतर रचनाएँ उन्होंने बड़े उत्साह से लिखीं। लॉकडाउन के अनुभव, कॉलेज की जिंदगी, स्टॉक मार्केट, अर्थशास्त्र, साहित्य और अनूदित रचनाओं के साथ ही कॉलेज के सभी विभागों और समितियों द्वारा आयोजित अनेकानेक गतिविधियों और कार्यक्रमों को भी पत्रिका में शामिल किया गया है।

2022 राष्ट्र की आज़ादी की 75 वीं सालगिरह का भी वर्ष है। सारा देश भरपूर उत्साह के साथ आज़ादी के अमृत महोत्सव का जश्न मना रहा है। स्वरम का यह अंक स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अपनी श्रद्धा और सम्मान अर्पित करता है, जिनके संघर्षों और बलिदान के कारण हमें आज़ादी मिली। स्वतंत्रता का महत्त्व भली-भांति समझने का भी यह अच्छा मौका है। स्वरम के 2020- 21 अंक में विद्यार्थियों की रचनाएँ कोविड 19 और घरबंदी के उन पर पड़े प्रभावों पर केंद्रित रहीं। इस अंक की रचनाओं में भी अलग स्वर में घरबंदी और महामारी से उपजे अनुभव अभिव्यक्त हुए हैं। निराशा और असमंजस की जगह विजय का उल्लास और इस उम्मीद की झलक भी उनकी रचनाओं में मिली कि हम इस बाधा को भी पार कर लेंगे।

अंबेडकर-फुले अध्ययन समूह द्वारा पहली बार सामाजिक न्याय सप्ताह का आयोजन इस वर्ष किया गया। इसके तहत संपन्न हुए कार्यक्रम और गतिविधियों की जानकारी देने के लिए इस अंक में एक विशेष खंड जोड़ा गया है।

जिस हर्ष के साथ यह अंक प्रस्तुत किया जा रहा है, उम्मीद है उसी भाव से इसे ग्रहण भी किया जायेगा। आने वाले समय की शुभकामनाओं सहित

संपादकीय मंडल
स्वरम

‘सामाजिक न्याय सप्ताह’

आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर देश भर में ‘अमृत महोत्सव’ मनाया जा रहा है। ‘दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स’ में भी इसके तहत विविध कार्यक्रम संपन्न किए गए। ‘विविधता में एकता’ हमारे देश की प्रमुख विशेषता है। स्वाभाविक ही है कि अमृत महोत्सव विविधताओं का महोत्सव बन जाए। अमृत महोत्सव का एक रंग ‘अम्बेडकर-फुले अध्ययन समूह’ और ‘आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ’ के साझा प्रयास से महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती के अवसर पर 11 से 19 अप्रैल 2022 तक चले ‘सामाजिक न्याय सप्ताह कार्यक्रम’ में देखने को मिला। संभवतः यह पहली बार हुआ कि किसी संस्थान में सप्ताह भर सामाजिक न्याय पर कार्यक्रम किया गया हो। डॉ. अम्बेडकर का स्पष्ट मत था कि सामाजिक आजादी के सुनिश्चित होने पर ही आर्थिक-राजनीतिक आजादी मायने रखती है। बाबा साहेब और सामाजिक सुधारों के पुरोधा ज्योतिबा फुले की जयंती को मनाने का इससे बेहतर तरीका नहीं हो सकता था कि रस्मी तौर पर एक दिन का कार्यक्रम करने की जगह सप्ताह भर सामाजिक न्याय, आजादी और एकता के विविध आयामों पर विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ विद्वान अपनी राय रखें और इन बिंदुओं पर विचार-विमर्श और विविधरंगी गतिविधियाँ होती रहें। ज्ञान, साहित्य और कला के अनेक माध्यमों द्वारा अब तक हासिल आजादी का सम्यक विश्लेषण और समतामूलक स्वस्थ भारत के स्वप्न को साकार करने के रास्तों पर गहन और व्यापक विचार-विमर्श किया गया। कॉलेज के और बाहर के विद्यार्थियों ने कविता-पाठ, गजल-गायकी और निबंध-लेखन में पूरे उत्साह से भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत ज्योतिबा फुले की जयंती के अवसर पर 11 अप्रैल को हुई। उद्घाटन सत्र में ‘सामाजिक-सांस्कृतिक वर्चस्ववादी दलदल और महात्मा फुले’ विषय पर विचार गोष्ठी संपन्न हुई। दिल्ली की एडिशनल आयकर कमिश्नर अलका गौतम इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। ‘दयाल सिंह कॉलेज’ के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. राजकुमार, ‘जामिया मिलिया इस्लामिया’ में प्रो. गोमती बोदरा हेब्रॉम, ‘द शूद्र न्यूजवीक’ के संपादक सुमित चौहान और ‘डीसीएसी’ इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. विवेक कुमार ने वक्तव्य दिए। समस्त वक्ता अलग-अलग क्षेत्रों के विद्वान हैं इसलिए विषय पर विभिन्न कोणों से विचार संभव हुआ और प्रश्नोत्तर सत्र में सहभागियों ने अपनी जिज्ञासाएँ भी पूर्ण कीं। पत्रकारिता में समाज के सभी अंगों को प्रतिनिधित्व मिलने की जरूरत एकाधिक सत्र में रेखांकित की गई। मीडिया का चरित्र समावेशी न होने की बड़ी कीमत विभिन्न अस्मिताओं को चुकानी पड़ती है। समकाल के विभिन्न उदाहरणों से यह स्पष्ट हुआ कि सच्ची आजादी के लिए यह अपरिहार्य है कि मीडिया की दुनिया में एकांगिता और अलोकतांत्रिकता खत्म हो और वह अधिकाधिक समावेशी बने। ज्योतिबा फुले द्वारा जलाई गई शिक्षा की अलख और सामाजिक बदलावों की मशाल को आगे ले जाने से ही समाज में समता, न्याय और आजादी की रोशनी फैल सकती है। इस बात के लिए डॉ. आंबेडकर ने जो वैज्ञानिक-बोध संपन्न व्यावहारिक रास्ते सुझाए, उन पर व्यापक चर्चा हुई।

इन विषयों पर विद्यार्थी-केंद्रित अनेक गतिविधियों के अतिरिक्त 13 अप्रैल को जब्बार पटेल द्वारा निर्देशित ‘डॉ. अंबेडकर’ फिल्म का प्रदर्शन किया गया। खचाखच भरे ऑडिटोरियम में सबने संजीदगी से एक साथ अंबेडकर की जिंदगी के जाने-अनजाने पहलुओं को आत्मसात किया और दिशा और प्रेरणा अर्जित की। 18 अप्रैल को कपिल शर्मा द्वारा संस्थापित ‘संगवारी’ ग्रुप द्वारा ‘जय भीम’ नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया और उक्त समूह के साथ शिक्षकों और विद्यार्थियों ने भी बदलाव विषयक उत्साही गाने भरपूर जोश के साथ गाए।

‘सामाजिक न्याय सप्ताह’ के अंतिम दिन 19 अप्रैल को ‘समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व – बाबा साहेब अंबेडकर की समावेशी विकास की अवधारणा’ पर आयोजित सत्र में विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। हिंदू कॉलेज, इतिहास विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रतन लाल, जाकिर हुसैन कॉलेज, हिंदी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर लक्ष्मण यादव, आर्टिकल 19 के संस्थापक पत्रकार नवीन कुमार एवं कॉलेज के अर्थशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बीर सिंह एवं समापन सत्र के मुख्य अतिथि अभय कुमार दुबे और कॉलेज प्राचार्य राजीव चोपड़ा ने अपने विचार रखे और कार्यक्रम की समावेशिता और सामाजिक न्याय की भावना को बल दिया। अंत में निबंध, कविता तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेताओं को इनाम और प्रमाण-पत्र दिए गए। आईक्यूएसी के संयोजक श्रीकांत पांडे और अंबेडकर-फुले अध्ययन समूह के संयोजक प्रो. सुजीत कुमार ने संबोधन वक्तव्य दिए। डॉ. अमित कुमार यादव, डॉ. नीलम यादव, डॉ. बिजया ठाकुर, डॉ. रेणु सिंह, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. पूरण चंद, डॉ. निहाल अहमद, डॉ. प्रत्यय अमृत, सुश्री मानसी कपूर, सुश्री मीनू कुमारी एवं विद्यार्थियों ने विभिन्न सत्रों के संचालन, धन्यवाद ज्ञापन एवं अन्य दायित्वों का कुशल निर्वहन किया। सही मायनों में आजादी और न्याय को समझने और पाने के प्रयासों के निमित्त सप्ताह भर चले ‘सामाजिक न्याय सप्ताह’ के इस सार्थक आयोजन ने सभी सहभागियों के इतिहास बोध को समृद्ध किया। यह संकल्प भी प्रकट किया गया कि ऐसे कार्यक्रमों के सिलसिले आगे भी चलते रहेंगे। अन्य संस्थानों ने भी इस कार्यक्रम से प्रेरणा ले कर ‘सामाजिक न्याय सप्ताह’ मनाने पर विचार किया, यह भी इस कार्यक्रम की बड़ी सफलता रही।

DR. RASHMI RAWAT

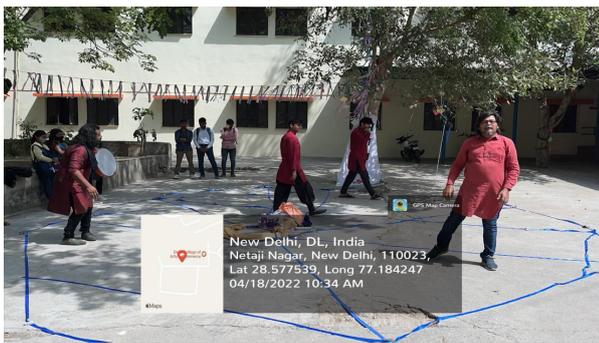
ASSISTANT PROFESSOR

DEPARTMENT OF HINDI

DR. AMBEDKAR – PHULE STUDY CIRCLE & SC/ST/OBC CELL

Dr Ambedkar – Phule study circle in collaboration with SC/ST/OBC Cell of DCAC organized an online lecture on 11 December 2021 on “Women Empowerment and Economic Development: Dr B.R. Ambedkar’s Perspective” by Dr Bibek Kumar Rajak, Associate Professor, Department of Economics, Dyal Singh College. Dr Ambedkar – Phule Study Circle celebrated Savitribai Phule’s birth anniversary on 8th January 2022 on the topic, “प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले और उनका सामाजिक योगदान”. Guest speakers were Ms Anita Bharti, Sahityakaaar and President – Dalit Lekhak Sangh and Dr Bijaya Thakur. Dr Ambedkar – Phule study circle celebrated Social Justice Week from 11–19 April 2022. On 11th April 2022, a panel discussion was organized on the topic, “Mahatma Jyotiba Phule and The Morass of Socio-Cultural Hegemony”. The honourable Chief Guest was Ms Alka Gautam, Additional Commissioner of Income Tax, Delhi and the Speakers were Dr Raj Kumar, Associate Professor, Dyal Singh College; Dr Gomati BodraHamborn, Associate Professor, Jamia Millia Islamia University; Mr Sumit Chauhan, Founder and Editor, the Sudra, and Dr Vivek Mohan, Associate Professor, DCAC. On the second day of the week-long celebration, various activities like Poster making competition, poetry competition, essay writing competition, and debate competition were organized. On 13th April 2022, a movie, entitled “Dr Bhimrao Ambedkar” directed by Jabbar Patel was screened in the college’s Multipurpose Hall. On 18th April 2022, a Nukkad Natak and Musical Programme was put up by Sangwari Group. On the last and the final day of the week, 19 April 2022, a panel discussion was organized on the topic, “Liberty, Fraternity and Baba Sahab Ambedkar’s Narrative of Development”. Our Honourable Chief Guest was Prof. Abhay Kumar Dubey, Chairman Governing Body, DCAC and the guest speakers were Dr Ratan Lal (Associate Professor, Hindu College), Mr Laxman Yadav (Assistant Professor, Zakir Hussain College), Mr Naveen Kumar (Founding Editor, Article 19 India) and Dr Bir Singh, Associate Professor, DCAC.

डॉ.बी.आर.अंबेडकर प्रकोष्ठ तथा आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के साझा प्रयास द्वारा 72 वें संविधान दिवस के अवसर पर 25 नवंबर 2021 "संविधान की दृष्टि और वास्तविकता" (The Constitution : Vision and reality) पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो.राजकुमार जी (राजनीति शास्त्र विभाग, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा संविधान एक बहुत ही श्रेष्ठ संविधान है जो कि दुनिया भर के संविधान से चीजें ग्रहण कर निर्मित की गई हैं।



MADHUBANI LITERATURE FESTIVAL

Under the aegis of IQAC Delhi College of Arts & Commerce collaborated with the Centre for Studies of Tradition and Systems (CSTS), Delhi and got an opportunity to participate in it's two major cultural activities during 2021-2022.

The first in the series was the 4th Madhubani Literature Festival held in Kameshwar Singh Darbhanga Sanskrit University, Darbhanga from 12th to 15th December 2021. Before its commencement, CSTS held press meetings and preparatory meets in Delhi wherein many students of the College participated and were responsible for visual and textual codifications of activities. The festival was graced by the presence of guests like Padmashree Usha Kiran Khan, Padmashree Ram Gopal Bajaj, and Smt. Sujata Prasad, Prof Bhimnath Jha, Smt. Anamika, Smt. Chitra Mudgal, Sh. Ram Madhav and many others.



Internationally acclaimed Bharatnatyam exponent Veena C Seshadri performed on "Jaya Janaki", and the famous actress, Kanupriya Pandit enacted in the play named "Jayein Se Pahine: Siya Piya Katha", written by Padma Shree Usha Kiran Khan and directed by renown actor and theatre director Padma Shree Ram Gopal Bajaj. Another major event was the display of couturier work – "Ekvastra" – based on the collective contribution of local weavers and women in the local weaving industry. The festival was a huge opportunity for the young generation and students of DCAC, as it provided space for "yuva sahitya" as well as young entrepreneurs to demonstrate their ideas on start-ups. Furthermore, the fourth edition also included intriguing events like a film-making workshop, "Aripan" – drawing competition for children and women, photography workshop, painting workshop, linguistics-based workshop, Stree Dalan, academic sessions on Literature, Language, Education, Industries, Philosophy and Environment, workshop and sessions on Gandhi in Maithili Literature, and a Heritage Bagghi Ride which covered the heritage and cultural landscape of Darbhanga.



At Darbhanga, three students Ms Parisha Thukral, Ms Swati Thakur and Ms Shada KC joined the festival and while performing their duties, they had an opportunity to meet scholars and artists of Maithili language and Madhubani Art. Ms Tejaswi Singh was the Student Coordinator of the festival on behalf of the college. The festival was supported by many organisations with the Ministry of Culture, and the Government of India plays an important role.

The Second event titled 'Sita Beyond the Body' was held by CSTS at IGNCA (Indira Gandhi National Centre for the Arts), New Delhi from 10th to 16th May 2022. It brought together leading Musicians, Writers and Painters of Madhubani Art and literature. The exhibition was not only pan-Indian but had received paintings from various parts of the world from countries such as Germany, Sri Lanka, Nepal, and India. This very exhibition provided a cultural exchange not only for the visitors but also for the artists themselves. The exhibition witnessed an enchanting Ved-path and Shanknaad performed by Pandit Vipin Mishra and Pandit Arjun Jha.



The lamp lighting ceremony was carried by the chief guest Milind Mara Goda, the Sri Lankan High commissioner to India, accompanied by Ram Bahadur Rai, Dr Sachidanand Joshi, IPS Dr Priyanka Mishra, artist Santosh Kumar Das, Smt. Tara Gandhi Bhattacharya, Smt. Jennifer Maragoda, Prof. Maninder Nath Thakur, Smt. Jaya Jaitley and Prof. Sushma Jatto. The guests shared their valuable information and thoughts on Maa Sita, Her being and their learnings from Her. The Darshanam gallery of IGNCA was jam-packed with visitors who seemed awestruck by the paintings. The function also provided a workshop on Mithila painting conducted by renowned Tantric artist Sanjib Kumar Jha – Golu Ji.



Many students of DCAC were involved in preparations that were made before the holding of the festival. Ms Tejaswi Singh, Student Coordinator of the College was also involved in the conceptualisation of the theme note and hosted the inaugural and valedictory functions. The function was attended by Mr Srikant Pandey, Convenor of IQAC. Mr Bhumit Yadav, Mr Siraj Ghani, Mr Navdeep Singh Bihal and Ms Pragya Singh of the college were also assigned duties as volunteers during the festival. The main attraction of the festival was the exhibition by Maithili artists on Vaidehi. It was visited by the students of the College along with Mr Ishaan Papreja.



The event also witnessed the theatre performance “Sita Banbas”, a Parsi Natak composed by Agha Hashra Kashmiri, performed by Melorang troop, and directed by Shyam Kumar Sahani. The play was very well composed and touched the hearts of the audience with its realistic acting. Prof Aparna Vaidik felicitated the actors and cast of the play. This was followed by an intriguing fashion show based on ancient Indian clothing called “Doorvaa”. The young and talented designer of the show, Kartikey Pandey, was felicitated by Dr Sushma Jatoo and Mrs Bibha Jha.

Both events were life-changing experiences for student participants. It was made possible by the commitment of the College to participate in extension activities revolving around cultural traditions in India encompassing women empowerment. College, besides providing intellectual resources to students, also paid for expenses incurred by student participants.

Dr Savita Jha Khan, convenor of CSTS also guest faculty in the Department of History, DCAC provided an opportunity for collaboration. Prof. Amrit Kaur Basra was the Coordinator and facilitated both events.

चिट्ठी नफरत को

गरम चाँद पर
कागज़ के फूल खिलते हैं,
और नफरत के काँटें
इस सर्द कमरे में झड़ने लगते हैं।
इस कमरे में साँसें कम हैं,
पानी कम है,
लोहा कम है,
आँखें कम हैं,
बातें कम हैं,
हुमस ज़्यादा,
कम्बल ज़्यादा,
काँच ज़्यादा,
आहें ज़्यादा,
नफरतें ज़्यादा।

नफरत टपकती छत है,
बुँद बुँद बिस्तर खाती है,
माँ पड़ी रहती है,
बर्फ़ चबाती,
बुदबुदाती,
घूरती,
नाक चढ़ाती।
मैं दौड़ जाता हूँ दूसरे कमरे तक,
सैलाब की तरह नफरत
गर्दन पकड़ती है,
जकड़ती है,
नोंचती है,
हँस देती है,
आँखों में देखती है,
और यूँ ही बदल जाती हैं ग़म में।

इस नफरत को जो ग़म है,
वो ग़म
मिट्टी सा ग़म है, जो जम गया है
इस खिड़की के जाल पर,
आशिक़ की चमड़ी पर,
बातों पर,
हल्दी सने नाखूनों पर,
नाखूनों के गिर्द फटते मांस पर,
कान की मैल पर,
उसके पर्दे पर,

माँ की लोरी-सा सपने पर
बग़ल की रिसती गंध पर,
खून में बर्फ़ सा बर्फ़ पर,
जम गया है,
जमा रहता है,
और एक दिन नफ़रत बन जाता है।

SEJAL ARORA

B.A. (HONS) ENGLISH

2ND YEAR

ज़िंदा

गोली बम बारूदों के बीच,
चींखों सिसकियों नारों के बीच,
लहराते हथियारों और झंडों के बीच,
जलती बसों घर मकानों के बीच,
बहते खून और घायल लोगों के बीच,
ज़िंदा बची रहती है इंसानियत कहीं,
बची रह जाती है मुहब्बत कहीं,
उसी प्रकार जैसे बची रह जाती है,
धरती में मुट्ठी भर नमी,
जेठ के तपते महीने में भी,
उसी प्रकार जैसे बची रह जाती है,
फूलों में हल्की सी महक,
उनके मुरझा जाने के बाद भी,
उसी प्रकार जैसे बची रह जाती है,
हल्की सी गर्माहट,
बुझी हुई राख में भी,
इस बची हुई मुहब्बत पर ही होता है
सब दारोमदार,
क्योंकि गोली बम बारूद,
मिटाने ही हैं बस
अमन के नए फूल खिला सकती है
मुहब्बत ही

HITESH KUMAR

B.A. (HONS) POLITICAL SCIENCE

2ND YEAR

वक्त के पड़ाव

वक्त के झरोखों से जब भी मैं झाँकती हूँ
 सूत्र नहीं मिलते हैं फिर भी मैं आँकती हूँ।
 एक था जहाँ कभी फिर अनेक हो गए
 वक्त के थपेड़ों में आज वे खो गये।
 घाटियाँ जो दिख रहीं- कल यहाँ पहाड़ थे
 मरुस्थल जो जंगल थे- सिंह थे दहाड़ते।
 चित्र यह विचित्र किन्तु प्रत्यक्ष सप्रमाण है
 वक्त के पड़ाव हैं या भाग्य के घुमाव हैं।

TEJASWI SINGH
 B.A. (HONS) HISTORY
 2ND YEAR



मजदूर

तस्वीरें बताती हैं खानाबदोशी की हालत,
 हर बार गुहार लगाना ज़रूरी नहीं होता,

कुछ लोग इस कदर दर्द को छुपाते हैं,
 हुकूमत के फैसलों को अच्छा बताते हैं,

पहन रखा चश्मा रहमत-ए-दर का,
 पागल! दोपहर को भी शाम बताते हैं,

सींचने निकलते हैं सुबह सुबह खुद को,
 पक्की सड़कों पर पसीना बहाते हैं!

दरख्त की आड़ में मुलाजिम हैं बैठे,
 कुछ लोग इसको भी मुनासिब बताते हैं,

रातों-रात आशियाने बनते हैं जहाँ
 कुछ की दस्तकों से वीराने हो जाते हैं,

रोज़ सवाल करता हूँ सड़कों से मैं,
 वे कौन से रास्ते हैं जो ख्वाबों तक जाते हैं?

BALWANT GAUD
 B.A. (HONS) HINDI
 2ND YEAR

आवाज

काँप रहे हैं हाथ मेरे आवाज़ मैं हूँ लिख रहा
उड़ रहे परिंदे को आकाश मैं हूँ लिख रहा

काली घटा बादल को घनघोर मैं हूँ लिख रहा
वक्त को वक्त की रेत-सा मैं लिख रहा

एक दबिश कानों में शोर को मैं लिख रहा
ओझल होती दृष्टि में रौशनी को लिख रहा

बैठ गए वक्त से खुद को आज लिख रहा
थम रही आँधियों को तूफान मैं हूँ लिख रहा

शर्महयात को हाशिए पर लिख रहा
बुझ गई ज्योति को आग मैं हूँ लिख रहा

ज़िंदगी के नाम को दौड़ मैं हूँ लिख रहा
मंज़िल-ए-मुकाम को मौज मैं हूँ लिख रहा।

BALWANT GAUD

B.A. (HONS) HINDI

2ND YEAR

शिकायत



आँखों की नमी से शिकायत है।
इस दीवानगी से शिकायत है।

कोई रैर नहीं करता गमज़दा,
हमको तो हमीं से शिकायत है।

किस किस से कीजिये शिकवा यहाँ,
क्योंकि यहाँ सभी से शिकायत है।

अमावस की साज़िश के चलते,
चाँद को चाँदनी से शिकायत है।

अपने जैसा आदमी नहीं बनाता।
ये उस आदमी से शिकायत है।

किसी को मौत अच्छी नहीं लगती।
फिर क्यूँ ज़िंदगी से शिकायत है।

VIVEK VISTAR

B.A. (PROG)

2ND YEAR

पुकार

कुछ कहना है आज सबसे
जो वर्षों तक न कह पाया हूँ।
भीतर की इच्छाओं को मार कर
झूठी मुस्कान का दर्द सहता आया हूँ।
आज मगर मैं कह देता हूँ
है पसंद श्रृंगार मुझे,
अच्छी लगे ये लाली, बिंदिया
और पुरुष का प्यार मुझे
सुकुं देती है कलाई में चूड़ियाँ
मिलता चैन काजल से है
चढ़ते देख मेहंदी का रंग
प्यारी लगे मेरी बाँह मुझे
है समलैंगिकता स्वीकार मुझे
हाँ, है पुरुष से प्यार मुझे
भाता है संग मजनू का
ना लैला का इंतज़ार मुझे।
जानता हूँ, न समझ पाओगे
लिंग से लड़का जो ठहरा मैं
काश सुन सको पुकार मेरी
और समझो इन भावनाओं को
प्रकृति की ही देन हूँ मैं भी,
नहीं पाश्चात्य हवाओं की।

VANDANA CHAUBEY

B.A. (HONS) POLITICAL SCIENCE

2ND YEAR

हाल-ए-दिल तो अब तक कहा ही नहीं



हाल-ए-दिल तो अब तक कहा ही नहीं
ये ग़लत है कि उसने सुना ही नहीं

तीर गहरा लगे ये ज़रूरी नहीं
उससे तो ठीक है जो लगा ही नहीं

सब चलेंगे उसी के इशारों पर अब
बिन इशारे कभी जो चला ही नहीं

उमड़ कर रह गया बावजूद इसके
आँख का वो समंदर बहा ही नहीं।

VIVEK VISTAR

B.A. (PROG)

2ND YEAR

तनाव

ज़िन्दगी के इस सफ़र में लड़खड़ाते हैं सभी,
कोई गिरे बिना भी गिर जाता है।

हम क्या जानें कोई कितने तनाव में जीता है,
अल्फ़ाज़ बाहर आने से पहले ही दे देते हैं चोट,
बाद में लोग ढूँढ़ते हैं उनमें ही खोट
छोड़ देते हैं ये दुनिया मरने से पहले,
जो खुशियों की बजाए देखते हैं मुसीबतें सबसे पहले।
मत लेना कभी मानसिक तनाव,
कर देगा शरीर ये खोखला,
चलने देगा नहीं तुम्हें ये पता,
इस तनाव भरी ज़िन्दगी को बनाओ मज़ेदार,
रहो खुश, बनो दिलदार।

एक गुमनाम सैनिक की कथा

वो जो उसके हाथ में फूल था खंजर निकला
जिसको फाँसी पर लटका दिया बेकसूर निकला

चाँद तभी चाँद है क्योंकि हाथ में नहीं है
हाथ में लेकर आए थे कुछ लोग पत्थर निकला

कुछ जज़्बात नए जीये नए लोगों के साथ
फिर उनमें वही पुराना ग़म-ए-दहर निकला

बस गए थे हम तो सरकार ने उखाड़ दिया
क़लंदरों के नसीब में आख़िरकार सफ़र निकला

उसके चेहरे पर अलग ही 'गर्वित' नूर था
शायर जब अपने कान पर क़लम रखकर निकला।



GARVIT JINDAL
B.A. (HONS) HISTORY
1ST YEAR

UTKARSH KALRA
B.A. (HONS) ECONOMICS
2ND YEAR

लेख



आज की सुबह

तड़के ही आज दिल्ली की सड़कों पर निकलने का मौका मिला यह नवंबर की सर्दी का पहला सप्ताह था। जो ना सिर्फ ठंड का एहसास दिलाता रहा है, बल्कि उसमें सिमटी लाचारी को भी बताता रहा है। आज तक कभी तड़के आने का मौका ना मिला और मिला भी तो खुद को काँपने से रोक ना सका, पटेल नगर से निकलकर करोल बाग की सड़कों पर जा पहुँचे, जहाँ लोगों की सुबह उनकी दिनचर्या से हुई।



कई लोग ठहाके मार के चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे। वहीं एक तरफ एक शख्स अपनी फटी चादर से बाहर सिर निकालकर आती-जाती गाड़ियों को देख रहा था। गौरतलब यह रहा कि एक बूढ़ा व्यक्ति भीत पर लगे पोस्टर पर गौर फरमा रहा था। शायद अपने तजुर्बे को देख रहा था कि कैसे इतिला किए बिना समय बीता जा रहा है और पोस्टर पर लिखा एक जुमला, “आपके जीवन में दिवाली खुशियाँ लेकर आए” उसी जुमले को पढ़ वह बूढ़ा ठहाके लगा रहा था। हालांकि उसने जीवन में अनेक दिवालियाँ देखी होंगी, मगर उसके जीवन में कोई नयापन नहीं आया होगा। ये त्यौहार बिल्कुल उन नेताओं के वादों की तरह है जिनकी पहुंच तो जन तक है मगर उसका लाभ कम तक है। वह जुमला कहीं न कहीं संपन्न लोगों को ही दिवाली की शुभकामनाएँ दे रहा था वरना कौन ठंड में फटी चदर के नीचे, कौन मायूस चेहरों के साथ, कौन अपनी दिनचर्या के कार्यों से दूर

रहकर अपने परिवार में शिरकत नहीं करना चाहता। असल जिंदगी में त्यौहार एक विलाप, एक याद, एक लम्हे, एक वादे, अंतः एक आँसू-सा है। किरदार होते हुए भी कुछ लोग बेगार हैं। यही सिलसिला करोल बाग-झंडेवालान-पहाड़गंज से होते हुए नई दिल्ली रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा जहाँ पर अपनों का अपनों के लिए मुस्कराता चेहरा पहर से पहले ही अपने गंतव्य तक पहुंचना चाहता है। यही खूबसूरती भी है त्यौहारों की।

मगर उस बुजुर्ग नज़रिए ने आज तमाम शुभकामनाओं को ओझल कर दिया।

BALWANT GAUD

B.A. (HONS) HINDI

2ND YEAR

SHORT STORIES



AYI'S UDDERS

"It's a boy! Sanvi, see, it's your brother. Hold him for a second, please.....Hello, yes? Oh."

"Ayi, this baby smells like Baba, no?"

"It's your dad! Sanvi, see, he is gone."

November 6, 2020. The merriest and the most miserable day, Ayi said. In an impenetrable lockdown and hullabaloo in Ayi's heart, Sanvi was numb. Sanvi gazed at the rising flames of the galloping pyre turning into the darkest soot that settled in her eyes, without her knowing. Both her parents were to return home today, but only Ayi came with barter that sleeps, cries and pisses on Ayi, and laughs at the mockery of the arson in our veins. Maushi says the Baba left this baby boy to protect us in exchange. Miss Kashyap, my biology teacher, taught us that a child was implanted in Ayi's womb 9 months before today, was Baba dying from the last 9 months?

"Ayi, can we return this baby and call Baba back?"

"Shut up, bastard. Go, and finish your homework."

"Maushi, can I come home with you? I think Ayi hates me."

Sanvi's Ayi learned handloom craft at the age of seven, finding the old Shree Gajanan Sewing machine that Aaji bought, the only dowry Aaji could afford. It wasn't hard to find the machine, it was always there in front of their nose, carefully placed under the table, concealed with a crochet cover to hide the destitution from the poorest neighbourhood of the chawl. Dusting the machinery, Ayi, with the boy, our miserable albatross, suckling her brown nipples, had pangs of heat in her chest and a little shine in her eyes. At this moment, she missed Aaji more than her husband. Aaji would save her from the wrath of alcohol and meat. Aaji would send modaks on Ganpati when Sanvi would starve with the sugary sensation after a long scar of pitiful bitterness that we as a family thrived on.

April 14, 2021 "A sudden spike of Noble Corona Virus observed in the Naigoan regions of Palgarh District. Government officials declare an unequivocal lockdown for next month."

Fear was instilled in hearts. With at least one ill person in the family, the last thing you anticipate is loud ambulance sirens and the collapse of the public health care system. Ayi's clients wish for matching masks with their Nauvari sarees.

This was Sanvi's fourteenth trip to Maushi's place; she has forgotten Ayi's crow-feet wrinkles and sleek neck. All she remembers is the little albatross stuck to her breasts sucking the life out. After every trip, Ayi looks thinner, paler and weaker. Her eyes seem to droop out of their sockets, her life is now narrowed to colour combinations for clients' delayed blouses with shining dooris that she herself could never purchase.

"Nako, yours was the purple blouse, right? That's ready. I'll deliver today. Okay, I'll talk to you later. Ho, ho! Sanvi! Sanvi, you are going already? You look more like Maushi than me, now. Baba, take care, okay? I love you, forgive me if you can."

"Ho, Ayi. I'll see you soon." I'll see you never, Never.

The room was locked for 4 days straight until the neighbours felt the stink travel to the back of their heads. Finally, Mr Narayan opened the door, a door that enclosed a crying child, a dead body and a burden of survival.

"Should I go check her pulse, Usha?"

"Nahi Nahi, Narayan Ji! It's a communicable disease. I don't want you to risk your life."

"The child is alive. Let's go fetch it."

"No, you can't touch it. It was with this body for quite some time. Let's report it to the police first."

Narayan is disturbed by the sheer audacity of Usha to not feel. The biggest sin is to deny a dying its formal departure, will Lord Vishnu ever forgive him for this? Maushi was informed; even she refused to touch the baby, scared of an approaching infection. Little did she know that her heart was infected, too. Sanvi saw the mother's face and refused to recognise her. "This can't be Ayi! Ayi can't die. You were not meant to go."

The police are looking for hands to hold the baby, but Maushi is not there. The hands that held the baby were tender with nails so small that you could imagine their absence.

SEJAL ARORA

B.A. (HONS) ENGLISH

2ND YEAR

“The child has been hungry for the past 4–5 days, what are you going to do?”

What is Sanvi going to do? She looked at all the possible breast owners around, and then their faces. Faces that were turned in the direction of the unknown. Unless she saw the brown udders of the cow Ayi fed. Ayi left this cow to protect us in exchange. Looking into the eyes of the baby, Sanvi says, “Ayi was right, you look like Ayi. And, I... I.. look like Maushi. I want to look like Ayi. Ayi!” The albatross smells like Ayi more than Baba, now.

“Can we return this cow and call Ayi back?”

“Shut up, bastard. Go, and finish your homework.” I heard Ayi, one last time.

SEJAL ARORA

B.A. (HONS) ENGLISH

2ND YEAR

THE OTHER LAND

It was the summer when Arathy’s myna Kendru went to the other land. Arathy is my best friend, but only after Appa and Amma. Hmm, Appa must be running in and out, in and out of the house with wet clothes in his hands, freshly plucked from the clothesline like guavas. Monsoons were arriving, it was humid a month prior. As if Amma’s sweat while transcending to the other land managed to seep through the sky and now makes everyone in Kerala sigh. Amma had hair of silver and teeth of gold, Amma had a heart full of love for me and Chemmeen Curry, and disgust for Appa’s untrimmed nails. “Mone (Son), go cut your nails, or else you’ll have to do the dishes too.” Appa misses my mother, a mother I never saw,

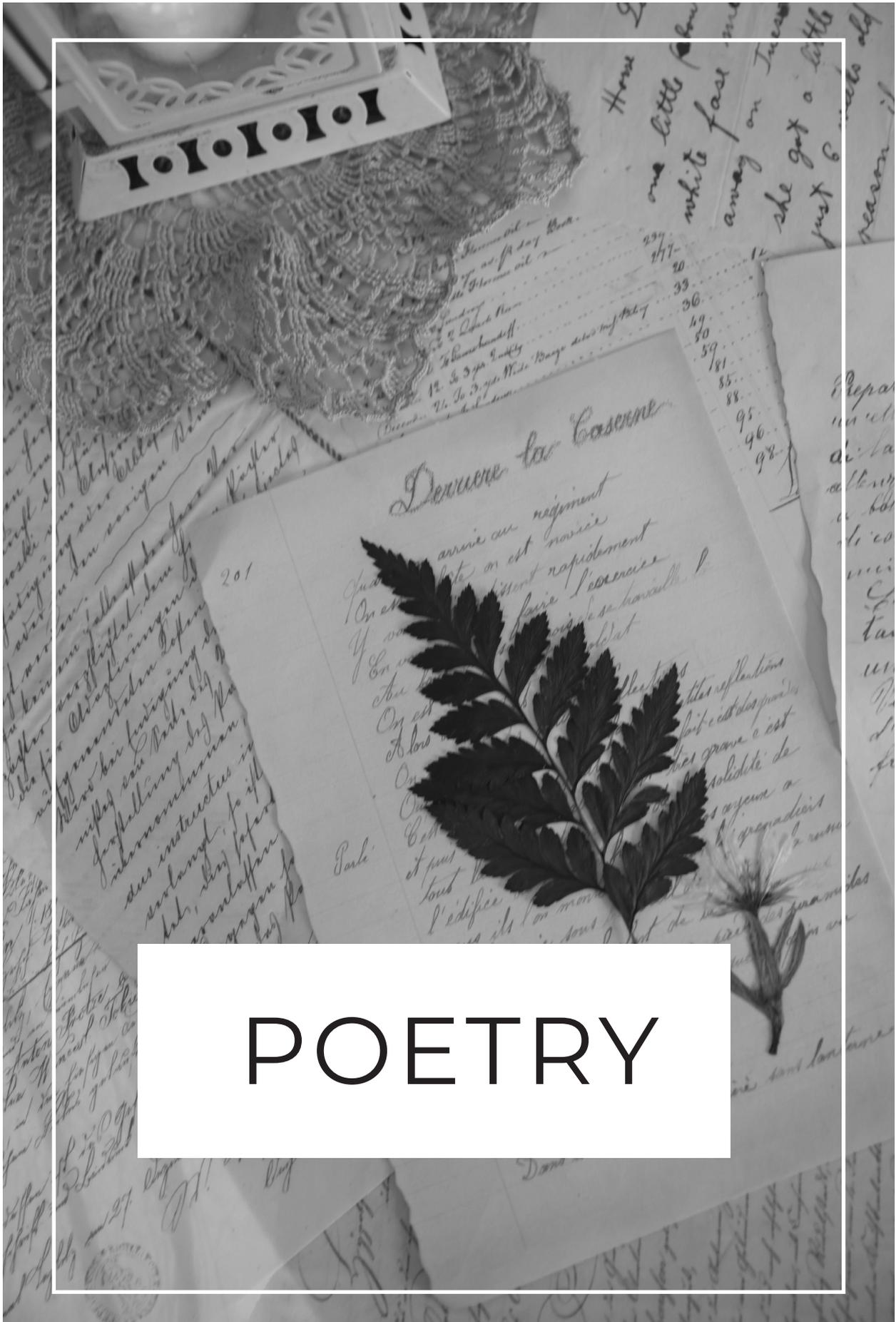


he says my eyes remind him of her. She had straight long rope-like hair and dark black eyes, just like a gazette. My mother, they call her Shanthi, went on a pilgrimage to the other land a few days after my birth to pray for my well-being. Appa and Amma say that the land is far far far far far from here and only a special vehicle can carry them. So far, I’ll only meet her the day I complete 29 years and 41 weeks of my life, Baba told me. Arathy calculated it would be a Sunday, no school. I’ll talk to the gazette like mommy for one entire day. I hope Appa will let me skip homework that one day. But what will I call her? Ammachi? Will she teach me the art of making a perfect Iddiyapam? Amma went on the same pilgrimage today. Appa was crying. I am hungry, who will make Kadala today? “Appa, did you cut your nails? If you won’t, Amma will come rushing back from the pilgrim to have them done.” Appa misses Amma. Arathy misses Kendru. Only I know that the journey is tiring. They must be sweating. Soon rains will come and floods too. Oh, the clothes rest on the clothesline, wet, are they crying too? Oh, Amma, when will we meet again? I turned 6 years 4 weeks and 2 days ago today. Appa can we do the math...

SEJAL ARORA

B.A. (HONS) ENGLISH

2ND YEAR



POETRY

THE EVER FLOWING WATER

Tao, the unnamed union,
the mysterious force moving the cosmos,
flows through nature
flows through life.

It silently flows like the river
across the mountains with bedecked snow
nurturing everything on its way
merrily flowing as the glittering sun rays
Dancing with its ripples and waves.

At this stage of life,
the actors are in tune with the divine,
there is no trying to prove one's mettle
or hopelessness to settle.

The soft and flowing are alive,
The stubborn and stiff are dead.
Water, if damned, comes to halt
smoothly it takes
the shape of the vessel.

Square or circle, glass or pond.
Finding calm in unruffled lakes,
acts as the mirror for nature
to see what it had made itself.

Water, when released,
flows like the river.
It wends its way gently
around every challenge,
beholding depth like empathy.
It avoids obnoxious heights
and pours itself selflessly
smooths every object along its way.
The elixir of life flows...

Between the heart and mind,
the two sides of the river
let there be peace between the two,
for the banks decide the direction
the river obeys and flows.

"To err is nature", it is said
wrong directions and wrong places
repercussions follow.
It accepts all the filth and sorrow too.

It becomes muddy and full of puddles.
Yet, flows eternally without resistance.
It carries on hope,
dancing with its ripples and waves
clearing itself effortlessly.

For the one who follows Tao
knows the mysteries of this universe.
Water, the exemplar of Tao,
does not install fears and mistakes.

It shows how to celebrate,
nurtures living and non-living alike,
only confronts when its flow is blocked
shows acceptance towards the truth of life,
perennially benefitting myriad things.

The experience never lies at the destination
But along the journey.
Always flowing, Always moving
There is a godly supremacy in soft and gentle



OINDRILA GHOSH

B.A. (HONS) POLITICAL SCIENCE

2ND YEAR

THE MONK STOOD BY
THE SEA

The solace sought by
a lover's longing eyes.
On the serene calm lake
a divine reflection appears.

An accomplice whose rays lure
everything past the door
to the mysterious mire,
swallowing all is its only desire.

A place in the children's tale,
where fairies and elves sail.
A call for the hiding beast to howl
and break the binding leash.

Can't I exist in the cosmos,
as a part?

TITLEE SEN

B.A. (HONS) ENGLISH

2ND YEAR



WHO'S FREE?

There's a sunken fossil of a ship buried in
low trenches of my chambered heart
The influx brings in emotional bloom of
blue green algae
It is decorated with mummified bodies and
there's always a haunting music
Living souls have not gone down so far into
the sea of underworld
Yet there's a hell burning inside hollow heart
of hallowed love
And all these animals have sunken
with webs spun around them like cocoons
Will they rise like a Phoenix ; a butterfly
Upon debris of broken promises
Or fade into lifeless sea
Into Hades arms
Who you ask?
They are people you know
Your neighbours, your lovers
The forsaken, the bastards
You who live
In the dying earth
On whose cremated ground
On whose grave do you stand tall?
Ask the sinners
Going to the Lord of sins
Do they only see hell unto death
Are the livings free?

NABEEL AHMED

B.A. (HONS) ENGLISH

1ST YEAR

SWEET SEASONAL SHOWERS

Feel the baring breeze
on your overworked palm.
Walk in the woods,
for the soul to calm.

Gaze at the azure rills
piercing through the chest of the hills.
And the high-headed hibiscus flowers
that smile...

Deliriously in love
through the sweet seasonal showers.

SHASHANK RAWAT

B.A. (HONS) HISTORY

2ND YEAR

MAPS

Erase all the roads
draw the map anew,
Let the dots be distant
name the towns preposterously,
I'll dart my favourites and plan a stay –
maybe for a week, a month,
or the rest of my living breathing minutes.

Be vagabonds on the streets of a metropolitan,
elite in vineyards with summer wine,
drive miles to find home.

I travel in my imagination
farther than these roads will ever take us.
My mind, the map of the universe.

AMOLA SHRIVASTAVA

B.A. (HONS) ENGLISH

2ND YEAR

SHE & HER

Her grizzly cloudy head,
Always catching up with the sun.
Brimming with hope and scepticism,
Balancing her crown as she lives.
I wonder who is she

Her life tastes like cocoa,
Equally bittersweet .
Her world smells like vanilla & musk,
Caramelised by occasional eruptions,
To make it more scrumptious.
She's empowered with a voice.
And saturated by ambitions.
I wonder who is she.

Quality outweighs quantity,
Wrapped around her head.
As she loves to marvel,
What goes inside a person's head.
Her knowledge makes her distinct,
And her high heels keep her grounded.
Appreciative to dance on each moment .

Laced by gold necklaces,
That remains timeless on her thick skin.
Though she snivels over unjust.
Her raison d'etre,
Consist a long list of ticked off boxes.
Her youth is not just by age,
But her lifestyle.
She believes in her destiny,
To find her Mate.
He who admires,
Her beyond her face.
To bloom together.

I wonder who is she.

The one reading may wonder,
Over various prospects.
But her pen never lies.
Even when the world wonder who is she,
This 'Her' life.

RIYA GUPTA

B.A. (HONS) HISTORY

3RD YEAR

THE MOON'S WISH

The solace sought by
a lover's longing eyes.
On the serene calm lake
a divine reflection appears.

An accomplice whose rays lure
everything past the door
to the mysterious mire,
swallowing all is its only desire.



A place in the children's tale,
where fairies and elves sail.
A call for the hiding beast to howl
and break the binding leash.

Can't I exist in the cosmos,
as a part?
Nothing to be
and nothing to impart?

SHIVPRIYA KUMARI
B.A. (PROG)
2ND YEAR

WAR

A barren land, blasted doors
shattered windows and the
rubble covering every inch of the ground.
Blood is splattered on the cracked mirrors,
and desperate handprints on flaming cars.

It was just another town,
made of distracted people
and coffee mishaps,
tired nights and bedtime stories,
fateful collisions and Monday mornings.

Now, he walks on the ruins
and cries for the lost souls of puzzled kids,
and tear-stained cheeks of scared lovers.
This was once a home,
No more! No more!

Death has a heart
but wars do not.v



SHASHANK RAWAT
B.A. (HONS) HISTORY
2ND YEAR

LA PROMESSE

Walking on the grass, now barefoot,
 I'm thinking of the promise we made that day.
 I'm thinking of what you meant, when you hummed
 Assuming, I'm not listening.
 Your eyes were fixated at the purple tulips in my hand,
 Scaring and relieving them.
 Now, holding a bouquet of heliotrope and yarrow
 I'm waiting for you to fulfill the promise you made.
 My feet are damp and soggy
 But my heart is the Indian Ocean.
 I'm walking through the woods;
 My eyes closed;
 encompassing every little tremor arising from the core.
 Today, the sunflowers do not see eye to eye with their lover
 Perhaps that's why the sky is wailing.
 The grasses encrusted with gem; honey dripping,
 And I lay there soaked; not moving an inch.
 How I wish I'd know what's perspiring in you!
 But wait is bittersweet.
 I'll wait for you like a chukar,
 Until your blinding lights satiate my thirsty soul.
 Should I discard my bouquet for a pink camellia?
 You know what It means, right?
 Because if you do, just know,
 I'll adhere to it until the moment comes.
 Now, adorned in a crown, layered with soft
 Jewels and a resplendent dress.
 In a decorated altar, with purple hues,
 I stand in the center, a red silhouette.
 Alike Aurora today I'm holding pink lotuses with ferns,
 Peaceful on the outside, but my bosom is racing.
 Your dark hair- today darker than Erebus,
 But your eyes - the brightest galaxy.
 With the potential to entrap me,
 Like the many planets lying on its seabed.
 Our one eternal phase has ended,
 While the other begins from now.
 Your time to fulfill your promise has come,
 So today with you; I promise to keep my promise too.

DEEPTI CHAUHAN
 B.A. (HONS) ENGLISH
 2ND YEAR

MY PURPLE LIFE

In the barren land,
 With nothing to see for a long while.
 Except that flowing brook which kept greeting by.
 There was a family. Soo pretty with it's purple strokes
 But otherwise hollow inside.
 I was the seed who couldn't decide.
 To fly away high or keep nearby.
 It was a matter of great choice.

Once there was a bud.

Wishing for the world but struggling inside.
 His choices were made many winters before,
 But he kept trying otherwise.
 In soil which gave us life.
 His vision was to passby,
 But I saw it withering by,
 I saw his taken away before my eyes.

Once there was a bud who couldn't survive,
 And now it was my turn to decide.
 Here were flowers that smiled. That gave us there life,
 The flowers for whom I could give my life.

The other side was the world so divine,
 With it's bright colours and trees high..

I couldn't decide.
 But it would be fair to glance by.
 Setting my roots in unknown sky,
 Letting the brook surround me whole,
 Surrendering to the winds breezing by.
 Once there was a bud who couldn't survive.
 And now it was my turn to decide.
 Forget-me-not was my name.
 But were they speaking for themselves,
 Or to themselves,
 Was a lingering thought in my mind.

ARUSHI BANSAL
 B.COM. (HONS)
 2ND YEAR

IF THE WORLD WERE YELLOW

What would it be like
if the world were yellow?
The cruor in my eyes
will flow like
sunrays
on
Sundays,
while my tongue
swallows
the stuck guffaw
deserting
my yellow teeth!

Frida's bougainvillea
will wither to yellow,
and her pink voice
will fade as
Amma's bruises
turn golden, and so
will Baba's belt,
but only
the grey wall
with pencil
stretchmarks
will turn darker
each day!

The ocean was never
this salty before
a photo of Granny
crying at a beach
was taken,
but you can't bury
the ocean.
You can't
bury the ocean of her heart.
Granny told me,
when she was five,
she painted the white distemper
with crayons of emptiness
and whimper.
Granny was abandoned at six.
What if
her crayons
were yellow?

The jam on Kintsugi
mended cup that
Akari broke while
chewing the end of
his pencil,
will ooze
like lava,
when raspberry

change to
mango
or tangerine
or papaya
or clay
or pus
or urine,
Akari and kintsugi,
and an ashtray
from
Hiroshima,
all sit in an old
house of
Myanmar,
lost.

But I will remove the
yellow glasses from
your eyes,
will tear your
golden curtains,
and will make
you think
brown,
or purple
or blue
or black
or bamboo
or scars
or belts.

What will the
raspberry turn to
this time?
Will Frida ever
grow the corpse
flower on her
breast?

Will amma's bruise,
when they heal,
turn the dark wall
white?
Answer these,
Will you?
Till I bury
Granny in her
yellow coffin.



WHEN DID MY BODY BECOME YOUR BUSINESS?

I am short and lean,
but that doesn't mean you can intervene.
"Don't you get anything to eat"
is the question that I hear on repeat.
"Don't saunter here and there,
there's a chance for wind out here."

I am scorned and mocked
With your tongues forked.
My heart turns cold.
With the things you told.

Oh! how could you create
Such a living mess?
And when did my body
Become your business?

VISHAL KRISHNA
B.A. (HONS) ENGLISH
2ND YEAR

SEJAL ARORA
B.A. (HONS) ENGLISH
2ND YEAR

ARTICLES



TO MY DEAR NON-SR'ITES

Congratulations, you have made it! After a yearlong hassle, relinquishment and admission process precipitation, you made it to one of the highly acclaimed and reputed colleges of Delhi University. I understand, we all had a different college in our minds when we sat for our XII board exams. For me, like most commerce students, it was SRCC. But I paved my way to Delhi College of Arts and Commerce and trust me when I say this, that your three years at DCAC are going to be monumental and if you are a believer that things happen for a reason. Trust me, your fate has chosen the best for you.

If I had gotten just a little more marks in English, I wouldn't be writing this article here but I am grateful that I didn't. Rather than solely relying on placements that would have made my undergraduate journey merely a breeze through, I left my comfort zone and decided to make my own trail at DCAC.

This college stands testament to countless alumni, that growth is inherent and achievements are not defined by a brand of college. My own three years are nothing short of that testament. The experiences and opportunities that I earned because of this college, are for you to be exploited as well. If you want something in your life you work damn hard and get it, grab it, even snatch it. A college's name in your CV does not make or break your career.

But I'll spare you from making this article about how DCAC offers numerous opportunities, a diverse crowd to be in, and has the most erudite faculty and generous staff members. Rather let me begin with why DCAC will almost be a nightmarish place to be at.

9 out of 10 days, it will either be sweltering hot in summers, or unbearably bone-chilling cold in winters, or you will be sitting in freakishly small chairs until back breaks and you yearn to skip the next lecture, or you might want to chill near canteen but unfortunately, monkeys had the

same plan as you, or you scrounge around and find shattered buildings of Netaji Nagar which will evoke all your horror movie traumas. But oh boy, that 10th day! On that 10th day, you might just be sitting outside the canteen after an awry hour of lecture and enjoying the extra sugary coffee with your friend. You might spend a gap scheduled in the timetable in the air-conditioned library hiding behind a book and talking in whispers to your mate. You might bask in the sun on the ground on wintery afternoons with your gang, while balls of different sizes fly from different directions toward you. You might find an autowallah outside the college who will not wait for the "4th sawari" and drop you at the metro station at no extra charge. You might find yourself at MINI and enjoy the luscious honey chilli potato and the banta we all love so much. Might be that, you find yourself walking down the long road from college to Bhikaji station, an avenue lined with tall dense trees, leafy pathways, and bougainvillaea, and a platform you will stand for just a tad more with your friend to share last minute tidbits. You might stay late and endure a tryst with the sun and skies, and the wind will be your sweetheart. And on that 10th day, there's no other place I would rather be. For that 10th day, I can forgo being an SR'ite anyday.

Because in the end there are no shattered dreams. There are always dreams of becoming.

Signing off
A fellow non-SR'ite

ADITYA SINGH
B.COM. (HONS)
3RD YEAR



THE ONE MARKET THAT DIDN'T CLOSE: STOCK MARKET

The month of March 2020 would be remembered and reminisced for ages. We all are suffering the pangs of the novel virus and are currently amidst the 'third wave' of it. Normalcy is a thing long gone. Masking up, carrying assortments of sanitiser bottles, and keeping distance from others (though the first and the last are seldom seen to be followed).

We all may or may not have come to terms with the drastic changes that have taken place in our lives, and which may continue to happen for years to come. A lot of these are on the opposing side. A lot of new habits and practices caught on. A plethora of new trends filled our lives with thrill and happiness.

One such was the magnificent-looking build-



ding on Dalal Street. The 'Stock Market' was the biggest wonder and continues to be one. Amidst the salary cuts and job losses, retail investors rushed to the stock market to either make a quick buck or having gotten serious about their future and considering the financial uncertainties they live in, start saving up for a rainy day. This led to people exploring alternative sources of income, guiding them straight toward the stock market. Indian investors opened a record of 14.2 million new Demat accounts in FY21, nearly three times the figure in the previous fiscal year. Although the COVID-19 pandemic wreaked havoc and directly led to a market crash in early 2020, retail participation in the Indian stock market saw a huge uptick.

In FY21, as competing asset classes, such as fixed deposits, bonds, and real estate, yielded lower returns compared to stocks, retail investors flocked to trading for a quick buck. In FY21, Sensex and Nifty are poised for the best returns in 11 years. Both benchmark indices have risen 72-75% in FY21 so far, while BSE Midcap and BSE Smallcap have surged 96% and 120%, respectively.

Expectations of faster economic recovery and better corporate earnings instilled confidence in investors, tempting them to pour more money into equities. These are just mere statistics to look at. But the sentiment around the stock market, and investing has been at an all-time high. Every other person I talk to either invests in the stock market or is planning to do so.

We are amidst a pandemic, right? We are amidst two. Misinformation and miscommunication plague social media and it is an unreliable source to get information about various stocks. Yet my Instagram feed is filled with them, and it takes a lot of conviction to not be swayed by those 'tips'. Having said that, we need to move towards a formal education about the stock market, and a piece of basic working knowledge should be a prerequisite.

Hoping for a better year than the last two, lots of bull runs, and green numbers on the screen.

SANKAR V MURALI
B.COM. (PROG)
2ND YEAR

SHALIMAR GARDEN

Whenever we witness any Mughal-era garden, we get awestruck by its magnificence, splendor, and grandeur, as they have been a different cosmos in themselves. Many of these gardens served as the setting for major architectural works, such as the Humayun's Tomb in Delhi. Evidently, palaces also incorporated gardens into their layout, but they were not the sole reason behind the construction of gardens. The tradition of garden building in the Mughal era began during its founder, the emperor's reign itself, Babur, and interestingly they served as venues to pass leisure time and often to provide shelter to the emperor and royal family when they were on move.

Shahjahan had an excellent aesthetic taste and a life-long interest in the construction of superbly well-ordered gardens. During his lifetime Shahjahan built several gardens between Agra and Kabul, but among them, the Shalimar garden of Srinagar, Kashmir stands out. Shahjahan was very fond of Kashmir due to its climate and natural beauty and was also enormously impressed by various Mughal gardens there, such as Nur Jahan's Bag-i-Nur Afza, and Asaf Khan's Nishat Bagh.

Shalimar garden is situated on the edge of Dal Lake and set against the beautiful Pir Panjal Range of the Himalayas. It has been termed the most beautiful of all gardens by Frenchman Francois Bernier. It had long served as a garden but after the order of the emperor Jahangir to Prince Shahjahan in 1620 to dam the stream near Shalimar, it was converted into a terraced Mughal-type garden. Shahjahan in his reign enlarged the garden and extended it to the foot of the mountains, and additional pavilions were constructed. Consequently, it came to be referred to as Bagh-i-Faiz Baksh and Farah Baksh, but its original name Shalimar was never abandoned. The lower terraces, used for imperial audiences, formed the Farah Baksh garden and the higher terraces nearer the mountain, intended for private use, were known as Faiz Baksh.

This garden is divided laterally by a wide stream that emerges from the mountains behind and runs the entire length of the garden. Carved water chutes for rapid movement of running water and recessed niches for lamps were made, enhancing the garden's beauty at night when cascading water fell on the terraced walls of the garden. The center of each part of the garden

accommodated a black stone pavilion that had a tiered roof. The pavilions serving as imperial seats stretch across the canal overlooking cascading waterfalls. The garden also had a black platform, placed centrally in its lower part. The Shalimar garden of Shahjahan epitomizes the long-standing Mughal love of architectural settings within ordered nature.



MOHIT SINGH
B.A. (HONS) HISTORY
3RD YEAR

EARLY MARTIAN ECONOMY

You don't know the year clearly, but you do know that 2050 is a thing of the past by about more than a century. You know that 2050 was significant because it was then that Elon Musk's SpaceX completed its goal of bringing a million people – the first non-astronauts – to Mars to settle there. Today, SpaceX has made affordable and regular passage to Mars possible.

But just how affordable and regular is the route to Mars? Consider two things here:

However, many technological developments might be made possible, but a few things about the passage to Mars won't change – like escaping the gravity of the Earth to enter Earth's orbit, then performing an engine burn which would send the spacecraft into a trajectory towards Mars, and then finally entering the Martian atmosphere. The spacecraft will then have to go back the route it had come, all the way back to the Earth (since regular passage requires traveling in both ways). All this imposes certain expensive Fixed Costs on the entire process, besides the spacecraft itself, which would include the cost of a multi-layered heat shield (due to multiple atmospheric entries), fuel (no matter how efficient, a lot of this would be needed for orbital maneuvering and overcoming the force of gravity) as well as trained astronauts.

It takes 26 months for a Mars retrograde, or the situation wherein Mars and Earth are closest to each other, to take place (NASA). With present technology, it is possible to cover the distance between the two planets during the retrograde in about 6 months. This means that if the spacecraft launches in the absence of a retrograde situation, it will take a lot more time to reach Mars, and also to reach Earth from Mars.

Clearly, from the perspective of a common man, a journey to Mars will not be affordable. The average one-way ticket might cost at least \$200,000 (Mosher) and will take at least 6 months – the opportunity cost of which will be very high for a working individual – personally and professionally. As for the frequency of travel, it is most likely for a round-trip to Mars to occur once every 26 months. Of course, in that one opportunity, as many as hundreds of spacecraft will launch – both from Mars and Earth, going towards the other planet.

But would there be sufficient demand for people to settle on Mars shortly? We do know that only people with exceptionally sound financial conditions would be able to go. But

would they be willing to go? Not unless they have some better opportunities on Mars than on Earth, apart from a few exceptional cases of tourism. And Mars does have a lot of potential in comparison to Earth.

The Martian atmosphere contains carbon dioxide, nitrogen, argon, and some other trace elements, which means that it is possible to grow plants by compressing the atmosphere (SpaceX) without the need to spend precious oxygen reserves to grow plants. The excreted matter of the inhabitants would be used as manure to fertilize the Martian soil to grow plants. In turn, these plants would meet up the oxygen requirements for people living in the Martian settlement(s). The Martian polar regions are covered with ice caps, and hence even if no groundwater deposits are found, the ice caps would be sufficient to meet water requirements. Mars can also be used as a base for launching mining expeditions to the asteroid belt. Besides, the gravity on Mars is just 38% of what it is on Earth. This means that people would be able to lift heavier things and bounce around on the surface. This would make things like the construction of buildings possible at cheaper rates. Cheap real estate price levels would certainly attract more settlers and corporate interests. Additionally, Mars has an abundance of Nickel-iron meteorite deposits. Initial investors will thus have to build up the settlements and production units (for producing things that could be made from local resources that are used in daily lives) on Mars before people start coming in, from where the investors would earn their profit. Lastly, Mars has something in abundance that Earth is facing a shortage of – vast stretches of open land. This would essentially start the Martian economy.

In the very initial years, money existing on Mars would be commodity money, with things like Martian rock samples serving the purpose, since it would have value to collectors and for research back on Earth, and has an abundant supply on Mars. Gradually, however, fiat money would establish itself, alongside formal institutions such as banks. The currency may either be a new one, or an existing one (most probably the US dollar).

Of course, an economy is not restricted to only those who can afford to be on Mars. Elon Musk once said, "Mars will need everything from iron foundries to pizza joints" (Mosher). This implies that SpaceX will be sending some people to Mars who would otherwise not be able to afford it to

expand the Martian market and not only give it a resemblance of connection with the Earth to the settlers. However, the cost to bring such people would be very high. The entire life's savings of a janitor or a factory worker might not suffice to pay for their passage to Mars, let alone come back to Earth if they want to. They would be brought for the sole reason that their services would make the planet habitable to settlers, and in turn, attract more. Needless to say, such workers would likely never be brought back again to the Earth, thus becoming the first permanent residents of Mars.

The initial economy of Mars would be subsistence-based, and the Martian market would consist of only essential commodities like food, water, and cheap versions of terrestrial space suits (since the Martian atmosphere is too thin in concentration and lacks oxygen, and it would be too expensive to build a pressurized shelter over the entire area habituated by settlers). The initial Martian economy would be heavily dependent on imports from the Earth. However, as more and more Martian resources are put into production, increasing returns to scale would set in. Mars would ultimately become the exporter of heavy machinery and precious metals (mined from asteroids in the nearby asteroid belt) to Earth, whose value would be greater due to the comparative advantage of production on Mars relative to Earth. Over time, Mars would become a favorable destination to have control over – not only due to its economic value but also due to its strategic importance in connecting Earth with the rest of the solar system and beyond. An efficient administrative structure would be needed. As such, here are some of the many possibilities of how an administration could get formed:

SpaceX might become the ruler of either the entire Mars or a part of it. Like all rational firms, it would be profit-driven, causing a compromise in administrative matters which doesn't affect the Martian market. In the case of the latter, other companies on Earth and some national entities would also send expeditions to occupy other parts of Mars. One or several forms of currencies and private banking systems would emerge.

With SpaceX having its roots in the US, the Martian territories might likely be taken over by the US, maybe as a federal state of the latter. The US Dollar would become the currency, and the monetary apparatus of Mars would be controlled by the Federal Bank in the US. Other nations might also be willing to enter the race for control over Martian resources. Space-faring countries like China, India, Russia, and the European Union would likely join the arms and space race to control Mars. This might give rise to a potential conflict – and maybe we would witness the first war in space.

The United Nations, or a council appointed by it or by a similar conglomeration of nations, might take over the administration of Mars. This is because outer space forms a part of what is known as 'The Global Commons', which are not supposed to be under the sovereign jurisdiction of any one state, and require common governance by the international community (NCERT).

Lastly, the wealthiest or most reputed among the settlers on Mars might try to set up their oligarchical administration, or maybe a guild with lesser control. This way, trade and space exploration would flourish at the expense of absolutism and increase the gap between the rich and poor. In this case, the Martian settlers might not have to pay taxes, taking the profits they earn as their returns.

Settling on Mars would not be the end of human space exploration. Elon Musk in September 2016 gave an outline of plans for missions to the Saturnian moon Enceladus, the Jovian moon Europa, Kuiper belt objects, establishing a fuel depot on Pluto, and even some missions to the Oort Cloud from Mars (Wikipedia). Thus, the Martian settlements would pave the way for regular passages to the rest of the solar system.

SHAGNICK BHATTACHARYA

B.A. (HONS) HISTORY

3RD YEAR

EFFECTS OF PEER PRESSURE ON CHILDREN

Humans are social animals. The innate characteristic of humans makes them interact with people around them. No one can live in isolation; therefore, we tend to make friends as soon as we enter our childhood. This is the phase when we have many friends around us, playing and talking. This large circle of friends affects a child's decisions and mindset. The effect of the peer is such that it can lead to a lifelong mark on the kid's character. Children tend to imitate



their peers. The consensus of their friends also has an impact on what they think about their own selves.

The same happens with the children. They do not have the rationale to decide between the good and the bad. Whenever they feel that some characteristic of theirs is marginalizing them from their peers, they want to "correct" it. Initially, this pressure of "mending" or "correcting" may not have any visible mental effects. But in the long term, these can lead to severe conditions such as depression among children. The early signs are changes in the kid's attitude towards her/his life. She/he may develop a different taste in toys, clothes, and T.V cartoons, etc. which she/he enjoys. This change, however, is unlikely to have a negative impact if monitored. But undetected changes might make things difficult. The child may start developing a sense of inferiority, feeling of rejection, or even loneliness at times. These symptoms can be figured out without much expertise and cured. Over time, a sense of reasoning can also be developed in the child so she/he may decide the good for her/him instead of being sad.

MAYUR MAYANK
B.A. (HONS) HISTORY

LESSER KNOWN ENVIRONMENTALISTS OF INDIA

When we talk of environmentalists, the forerunners of climate justice, we are too conservative in our approach and usually associate them with activities involving planting trees, saving rivers, and lowering greenhouse gas emissions. But in recent years, we have witnessed the emergence of a group of young environmentalists who are simultaneously achieving sustainability and profitability through their entrepreneurial skills.

There are a number of startups transforming carbon dioxide, captured from industrial emissions or directly from the air into something useful as well as saving the environment. With 22 of the world's 30 most polluted cities in India, there is an urgent need to rapidly adapt and recognize these firms and help them develop at a large scale.

One such cutting-edge development is taking place in the battery industry creating a sustainable future. Nexus Power, a brainchild of twin sisters Nishita and Nikita Baliarsingh makes rechargeable, bio-organic, and biodegradable batteries from crop residue. Fascinated by sustainable lifestyle techniques, when given more insights into the world of sustainability during their course in business management, they came up with the idea to transform the mobility industry in India to achieve a sustainable future and pollution-free battery market.

A Bhubaseshwar based nanotechnology firm founded in 2019 aims to find a cleaner, greener solution to the presently available technologies without compromising efficiency and sustainability. It has come up with a breakthrough in problems faced by stubble burning.

Nexus power uses unburnt crops, one of the major sources of air pollution as raw material, and through a unique extraction and filtration process, manufactures rechargeable energy-storing cells. Multiple cells go into the making of a battery pack which is later installed in electric vehicles. These eco-friendly batteries are lithium-ion free and utilize crop residue as the raw material, which in turn protects from deterioration of air quality and efficiently manages the massive farmland waste generated in India. The interesting part is that the batteries charge 8-10 times faster and last 20%-30% longer than their counterparts, moreover, could be turned into manure when their lifecycle is complete. They not only address the issue of stubble burning but also increase the efficacy of electric vehicles, another green product.

The siblings have their eye on collaborations with multiple two-wheeler EV manufacturers in the initial years and plan to cater to commercial e-vehicles and four-wheelers in near future.

SARTHAK RASTOGI
B.A. (HONS) ECONOMICS

2ND YEAR

INDIA'S DIPLOMATIC OUTREACH IN 2020

The foreign policy of India regulates India's relations with the other states of the world in promoting its national interest. India has always followed a kind of sustainable and 5 diplomatic paths with regard to its foreign policy.

India has followed the principle of

- Promotion of world peace
- Non-alignment
- PANCHSHEEL
- Afro-Asian Bias
- Links with Commonwealth Support at the UNO
- Disarmament

With many foreign visits and participation of India in almost all the major summits be it at the United Nations, SARC, BRICS, etc. India has participated in these summits.

But due to the covid-19 pandemic that struck India and the whole world, there has been a change in them. The changes such that the summit has started to take place virtually and India has also followed the path of health diplomacy in this pandemic.

In this pandemic, the first drug that was recommended for the treatment of coronavirus was hydroxychloroquine. India has supplied this drug to almost 150 Nations including the USA and not only this, India has sent its medical staff and nurses to a few Gulf countries. The way India fought bravely with the pandemic has been globally acknowledged. This has helped India to strengthen its diplomatic reach. India is the center of the production of vaccines. We might not be doing the whole research and development. Now Vaccines have come into play and I think India will have a big role in the production of vaccines for its own use and even for global use.

And then there is another dimension, India is now taking the chair of the World Health Assembly which is not an executive position but as India sits on the top of the board that runs W.H.O so I think that India has a role now to shape the post-pandemic world in terms of how the relationships between the major countries are going to work out and how China must realize the events that took millions of lives. On a global front, India has always raised its voice over terrorism consistently. Now, for us, this is a very serious problem because Pakistan

has made it a cornerstone of its foreign policy to wage a proxy war against India by using non-state actors. What has changed in recent years



is not just limited to how we raise our voice in an effective manner at the International forums but how we have started attacking terrorist bases inside Pakistan. This is a major success for our security and foreign policy. We have been able to convey to the world that Pakistan has been helping these non-state actors and therefore we have no other method than to destroy the terrorist bases in Pakistan and by and large the world has supported us in this regard. We have been standing these attacks for a very long time like the one in our parliament.

The Mumbai terror attacks, Pathankot, Uri, and last year's Pulwama Terror attack but in recent years we have started to retaliate strongly. Significantly, we have also utilized the international opinion which is in our favor to reign in Pakistan particularly by putting it on the grey list of the Financial Action Task Force (F.A.T.F). The international efforts which are made in this regard are beginning to have an effect. In the international context, we are now going to be a member of the United Nations Security Council though in a non-permanent capacity and there is a crucial international opinion that is building to the effect that India should find a place as a permanent member of the United Nations Security Council. This significantly has led India to play a decisive role on the global front.

SHIVAM SINGH

B.A. (PROG)

1ST YEAR

THE FUTURE OF EDUCATION, RESEARCH AND TEACHING AFTER COVID19

The pandemic has immensely affected education worldwide. There was an urgent need to adapt and shift to new methods of teaching, which is the digital method. Classrooms were moved to screens of smartphones and laptops. This sudden change was not easy to adjust to. However, over time, it has become more comfortable.

To understand where the world of education is going, it's first necessary to recognize the patterns that were already forming before the pandemic struck. Even before the pandemic, the digitalization of learning was accelerating. Many students were benefitting from the same as it is time-saving and pocket-friendly.

However, this pandemic situation has highlighted the need for digitalization across the country and provides a boost to online learning. It quickly became a cure for maintaining momentum throughout the lockdown since all that was required was a computer, tablet, or smartphone, as well as a reliable internet connection.



For students and learners, the pandemic's effects are more dependent on their level of education and, sadly, socioeconomic status.

The gadgets such as smartphones and laptops have become indispensable elements of our lives. We are so indulged in them that we forget that this digital access which seems like a basic necessity, is a privilege we are enjoying. The health crisis has created new disparities in student achievement and worsened old ones, jeopardizing education's future. The pandemic's negative impacts have been felt the most among

low-income students.

Last year, when the covid outburst appeared, our society security guard, Rajendra faced the problem that occurred by this sudden change in the education method. He has been working in society for 3 years with a meager salary. He is the only breadwinner of the family.

"My son has not been able to learn through online classes since March because I didn't have the latest mobile (smartphone). I couldn't afford it with my salary so I had to borrow money from my relatives to buy a new smartphone. By the time I could arrange a smartphone, he missed many classes. He was really upset and complained about our poverty." said Rajendra.

There are many students from lower-income backgrounds whose studies were obstructed due to a lack of digital access. This is overall the same picture across the country.

According to a study done by researchers at Azim Premji University in Bangalore, over 60% of students at the schools surveyed are unable to attend lessons regularly. This is due to "lack of a smartphone, numerous siblings sharing a smartphone, difficulties utilizing Apps for online learning, and other factors." Even if the students have access to smartphones they struggle to network. There were also instances of children climbing trees or going to far-off places to get a decent network to connect to the lectures.

According to the Print, "The Ministry of Education could play a crucial role in making online education affordable for all by promoting the use of TV and DTH rather than just smartphones as envisaged in the scheme National Mission on Education in Information and Communication Technology (NMEICT) but unfortunately shelved in 2014. India has more than 200 million TV sets covering 70 percent of the population against just 30 percent by smartphones. Instead of depending only on expensive smartphones, this scheme rides piggyback on the country's satellite-linked enormous television network. The only 'cost' the student has to bear is to adjust her family's TV viewing time to that of the classroom hours, while the rest will be taken care of under the scheme."

This disparity is not only in India but across the globe. According to the United Nations, half of the students who are presently out of school do not have access to a computer. Even among those who do, many lack access to the internet, the necessary circumstances or perseverance to maintain the habit, and parents who are either unwilling or unable to assist.

The pandemic has not only hurdled learning but teaching also. "Online education might seem to be effective but it is very challenging for us to teach. It was very difficult, especially in my subject, Accountancy, to adapt to the new methods. Everything cannot be done online; some subjects need workshops and other physical modes of teaching. In Accountancy the students need to understand the formulas conceptually and this digital teaching has made it difficult for me to comprehend whether the students are getting the concepts or not" said Jyotika Gupta a school teacher in Gurugram. "Many students miss the classes voluntarily as they have the option to skip the subjects in which they lack interest. It is boring for them as well as for us,

REFLECTIONS AND LEARNINGS FROM MY FIRST YEAR OF COLLEGE

as it lacks the personal touch and interaction which is only possible in offline mode. I hate the option of camera switch as it gives the students an option to turn off their webcams which makes it monotonous for me to teach, it feels like I am talking to my laptop.” she added.

Azim Premji University's researchers polled 398 teachers in five states and 1,522 teachers (in 1,522 schools). Because of the altered medium, more than 80% of the teachers polled claimed they were unable to form an emotional connection with their students. More than 90% of respondents feel that effectively assessing students online is impossible. Furthermore, half of the professors claimed that their students were unable to finish their homework assignments online, resulting in them not learning as quickly or completely as they would have otherwise.

Given the situation, teachers, both new and seasoned, will play a critical role in correcting these trends. Teachers and the government may save a generation of children from long-term harm by tackling the problems of a post-pandemic society.

There is always a ray of hope in the dark times. Online schooling was formerly considered an anomaly until the Covid-19 outbreak. This can be seen as the opportunity to bring change to the education system which is old and flawed. Everything now hinges on the world's ability to be daring and innovative, as well as its willingness to advance online learning.

JAIDEEP BEHERA

B.A. (HONS) JOURNALISM

2ND YEAR

‘I started my first year of college in 2019. It was my first Delhi experience; a gateway to freedom. I lived in the same city for almost all my life and studying in a different city was a dream I wanted to experience. The dream came true in 2019. I got shortlisted in one of Delhi University’s colleges. It was a surreal moment for me. I couldn’t get into a college that I wanted to go to, but it was okay for me as long as I was in Delhi. The first year of college taught me a lot of things. Most of them were unexpected and surprising for a recent high school graduate. But right now, I’m thrilled with the way things turned out. I want to share my experience with you all.

– It’s ok if you and your roommate don’t get along

I was nervous about the idea of living with a stranger for a year or more. I thought that after knowing him, I’ll eventually get along with him. But that didn’t happen. And soon I realized after some unpleasant experiences that it was ok for me to not get along with my roommate. I got along with students near my room and made a lot of wonderful memories with them.

– I just realized I am a morning person in college.

My sleep cycle changed as I went to college. I experimented with a lot of sleep cycles. When I was in high school, I could wake up early every day, but now I had the freedom to experiment and see what fit me best. And, I realized that morning suits me best.

– Managing finances

Budgeting and allocating the right money for the right use was an enormous responsibility. I never learned the skill of managing finances when I was in my first year. My meals were irregular, I was eating a lot from outside and spending money on unnecessary things. After a point, I realized this is not a way to live in college. I changed my spending and eating habits and it changed my life.

– Search for scholarships even after getting into the college

Searching for scholarships didn’t stop for me when I got into college. I kept looking for them and applying for them. I created a separate email account to receive and correspond to scholarship emails.

– Joining a Society

I joined an entrepreneurship society. We organized events, drives, fairs, funding, and other

different competitions to accomplish this aim. Getting involved with society expanded my network, and friends, was a great experience, and a lot of fun. But, it was also very time-consuming. At some point, I was doing only the social work and could not focus. So, I had to quit.

– Sit in the front row. Seriously.

I was less inclined to get on my phone and not pay attention to lecture/discussion material. I could also see better when I forgot my glasses or ran out of contacts.

– Keep in touch with your friends/family from back home.

College may have been a fresh and necessary start for me, but reaching out to my friends and family twice a week has kept me in touch.

– Rediscovering community and a sense of belonging

Found people with similar interests and goals like me. Having discussions, debates, and friendly chats on writing, politics, and understanding of life with them once a month was an enriching experience.

The advice I would give myself If I was starting my first year again:

– Learn how to write emails and talk to people, not your age.

Politeness and proper grammar go a long way.

– It's okay to be alone.

You just need to do “alone things” when you are by yourself. Loneliness is important. So is love, and the lack of it.

– Mental health is just as important as physical health.

Mental health is important, and so is staying away from other people's anxiety. Negative emotions spread like a virus, so make sure you don't get affected by other people's problems. Taking care of others can easily deplete you. Be in the right headspace when listening to other people's problems.

If you don't take care of yourself, you can experience burnout, stress, fatigue, reduced mental effectiveness, health problems, anxiety, frustration, and inability to sleep.

– Get a job (hopefully on campus).

Compared to later, you have more time to explore different ways to make money properly. Even a minimum-wage job for a few hours each week will net you some nice money for your dream trip or eating out with friends. (Ask college administration for any openings)

Have fun.

– Have fun.

You don't have to go out every single weekend. But go get coffee or study with a friend. Have some sort of interaction with others.

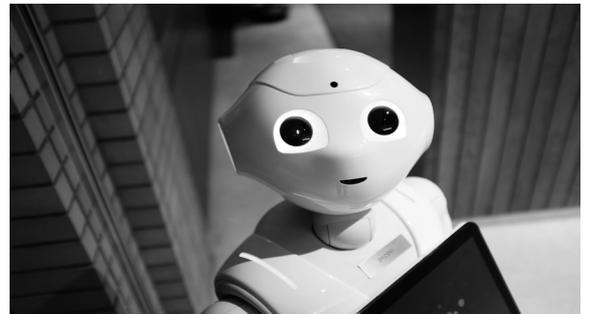
– Learn something you care about

Learn what you care about, even if you have to put up with a curriculum most of the time. That makes the pain more bearable.

DIGITAL INDIA FOR ATMANIRBHAR BHARAT: OPPORTUNITIES ON COVID AND BEYOND

There was a time, centuries ago people settled on the banks of rivers, and towns and villages mushroomed near the bank of a river. Time changed; towns started to develop near the highways, but now mankind will reside only at that place from where optical fiber passes. There has been a big change. Now we are moving towards a system that is technology-centric, gradually making us self-reliant or Atma Nirbhar. Our vibrant demography is the energy source for Atmanirbhar Bharat.

This pandemic in many ways has harmed



us but also taught us the biggest lesson of self-reliance. It has taught us how we can move from producing 0 PPE kits and N-95 masks to 3 lakh PPE kits and N95 masks per day. This was only possible because India turned calamity into an opportunity. This will turn out to be a catalytic agent in the reaction of making India Atma Nirbhar The Coronavirus Pandemic is a humanitarian crisis that has discontinued people's life. The COVID pandemic has catalyzed tech-enabled businesses such as Indian food-tech company Zomato, which has used its platform to work with grocery stores.

According to a study by a UK-based comparison website cable.co.uk; India has the cheapest mobile data in the world with 1GB costing just Rs 18.5 (USD 0.26) as compared to the global average of about Rs 600 this shows that there is extensive use of the internet and the roots of the Digital Revolution has reached the corners of the country which also has now been expanded by the undersea optical fiber connectivity to various parts of Andaman and Nicobar Islands. With cheap mobile data prices

and good connectivity, it will help the masses to connect and walk hand in hand with the contemporary world. This pandemic has also pushed many people who had not even done a single transaction through online payment to transact through the online mode. This has increased the knowledge, and reach and has increased the curiosity of people for knowing more about technology, especially the senior citizens. But there still remains a part of our society that is facing the digital divide.

It is rightly remarked by Sir Albert Einstein that, "Necessity is the mother of all inventions". As we observe that this pandemic has given birth to innumerable inventions and innovations across the length and breadth of the country which have helped in tackling the Coronavirus very effectively; quoting some of them:

- 1) The Aarogya Setu app.
- 2) The Swasa –N95 mask developed by IIT Kanpur.
- 3) An app called 'Lung AI' was developed by a Delhi-based student which could detect Covid-19 and lung disorders in just 3 to 5 seconds. These innovations have created a spark of Atma Nirbhar Bharat.

This pandemic has made us realize the positive side of technology; from video conferencing meetings to online education. It's not that these things were not before but the robust use was seen at this time. This pandemic has given us reasons to develop our technology system so that we get opportunities to grow in various sectors of development. A few are listed below:

- 1) In the agricultural sector, if technology is brought in, then, it would create wonders and increase the farmer's income. Information relating to weather is the most important one which saves the farmer from any kind of loss due to it. For example, a platform could be developed for farmers where various mandis and selling prices of various commodities are mentioned which are easily accessible by the farmers so that they have ease in selling their goods according to their choice. This makes our farmers self-reliant and as a result, the whole country prospers in the way of self-reliance. Mapping of various sites of farming

can also be done via GPS to know their terrain and soil type.

- 2) Businesses can also be run easily using digital platforms for example taking a scheme of the Government Of India which makes the person itself self-reliant it is the Gem (Government-e-Marketplace) it is aimed at procurement of any product required by the government of India directly from the manufacturer without any middlemen. This has many advantages; first of all, it would reduce the total cost of the item since no middlemen are involved and it would make the seller totally independent and self-reliant because they do not have to depend upon someone or look for someone to sell their goods and would have everything at just a click.

- 3) In a democracy the citizens have the supreme power, anything done with the help of citizens, crosses wonders, in the same way, if we create social groups and contribute our old smartphones and laptops which were not used to bridge the digital divide and connect with the world.

SHIVAM SINGH
B.A. (PROG)
1ST YEAR

ETHICS IN FINANCE: THE IMPERATIVE

Ethics is the notion of believing what is morally acceptable. The difference between what you have a right to do and what is right to do defines ethics as a deeper meaning which can be applied to various outlooks such as human behavior, business profession, etc.

Likewise, ethics in finance is a subset of these general ethics.

Ethics in finance rattles financial behavior or activities that are ethically right or wrong. Basically, it talks about finance which takes into account the ethical channelization of financial returns along with ESG (environmental, social, and governance) factors. Which should be followed by every individual from the Prime Minister to a farmer, including the salaried and rich class people.

The ethics in finance speak about truthfulness, honesty, transparency, and fairness in all sorts of financial activities. It is crucial for maintaining harmony and stability in financial services where people interact with each other and do all sorts of financial and monetary transactions on a daily basis.

Finance works as the backbone of any country. It is a crucial angle. A number of activities dealing with the management of monetary funds either through banking routes, e-payment wallets, or cash or the working of financial services such as the issue of equity shares, raising loans through debentures, etc. all form a part of finance.

Finance is the interrelation of various factors such as risk, money, and time period. Where there is a risk, people generally tend to minimize it by diverse means and end up committing fraud by adopting varied unethical measures for the greed of money. Numerous MNCs and companies have been found to be indulged in malpractices such as forgery, credit card fraud, embezzlement, and money laundering which leads to loss of reputation and repayment of huge debts.

The above situation suggests why ethics in finance is important to study, learn and practice in real life: –

- ❖ *It prescribes the standard for moral conduct in every industry as finance forms the spine of every industry whether food, health or manufacturing, or services.*

- ❖ *It also provides a moral reason in financial decision-making as finance theory is normative in nature, and some financial decisions can be made on the basis of ethical judgments.*

- ❖ *Maintains high consumer confidence and a good reputation with clients*

- ❖ *Understands its social license to operate and promotes social responsibility*

- ❖ *Enjoys a positive corporate culture and a dedicated, motivated, and ethical workforce*

- ❖ *Minimizes financial risk*

- ❖ *Avoids legal issues*

Since a company primarily hinges on financial needs and directives, it must follow the ethical route throughout the future. This can be achieved both

internally and externally, thereby resulting in a suitable environment for employees, stakeholders as well as market position.

As a CA studying student, I would like to quote a very routine example of how people and companies tend to adopt deceitful practices to save themselves from paying income tax to the government (as the tax works as a financial alternative for the government) like:- if X person purchased a scooter from an ABC company of let's say of INR 1,00,000 and the shopkeeper issues X a bill and keeps the receipt with him and after tears it off and retains the cash with him and make no note of the cash transaction in his books it ultimately reduces his income in hand and he will have to pay less amount of tax (falling within his tax slab) as the government department never knew about the transaction that happened.

The above example is also a reason for the question "Why does Narendra Modi, our prime minister, focus and emphasize more on online and digital payments?". It is because roughly more than a billion transactions take place in a day and more than half of which account for the cash transactions. These cash transactions are not even accounted for by the companies, and individuals in their financial statements and in turn reduce their incomes for the purpose of tax evasion. Whereas, online transactions are done directly through the banking channel and thus there is less risk of such a problem arising in the online payment system. As such transactions can be accounted for.

There are many such examples that can be quoted such as the Harshad Mehta stock market scam and various others that take place due to the loopholes in the Indian financial system which needs to buckle up and suggest and implement the necessary and required changes in the economy.

Ethics is one of the most important factors in the world of finances.

In the financial industry, the participating organizations must follow a proper ethics code. This is necessary for the internal functioning of the organization as well as external decisions that affect it.

Since finance is the backbone of any business and ethics are of similar importance, ethics in finance must be followed religiously without any discrepancy.

Introducing a proper code of conduct and ethical behavior to be followed in the financial system should be made and implemented and the people need to understand that with a strong and promising system, together with honesty and truthfulness we can make India financially fit and a one step ahead and progressing economy.

RIDDHI GUPTA

B.A. (HONS) ECONOMICS

2ND YEAR

LOCKDOWN AND ITS ETHICAL DILEMMA

Covid-19 brought a halt to the ever expanding and moving world. As this novel pandemic was highly contagious, the modern state government faced an ethical dilemma as to whether to enforce strict social measures which could and which have affected millions of lives or adopt liberal band of policies. However when this pandemic hit the world there was no established medication to it so the government worked out social distancing measures to address exigencies of the pandemic.

In this article we will be specifically dealing with the Indian context. In India when initially the social distancing measures and later the hardcore lockdown was brought, the authorities found it challenging to make people adhere to the stipulated norms, maybe due to the high population density, poor socioeconomic conditions and low literacy levels. Maintaining restrictive measures in these situations came with a lot of ethical issues.

Restrictive measures for epidemics in India are based upon the Epidemic Diseases Act 1897. There are many drawbacks to this law in today's context. Firstly, it is more than a century old which does not take into account today's scenario like increased urbanization, population etc. Secondly, it lacks a description of the duties of the government and rights of the citizens because of which the coordination is not built in responding to the outbreak as different states lay out their own policies. Thirdly, it is more 'policing' in nature i.e, it concentrates more on controlling rather than preventing the disease.

India, before applying lockdown, should have assessed what impact it can wreck upon the society, including an assessment of long term effects of it on society, economy and cultural life of its citizens. India is a home to a large section of vulnerable people. In this light the government should have been sensitive to their demands and issues. Social distancing is ideal for those who have a place to live and restrictive measures can be inflicted on those who have adequate food to eat and water to drink. Lockdown led to the loss of jobs and accommodation of daily wage earners thus increasing the vulnerability of already vulnerable sections of people which is against constitutional morality and justice. A number of surveys conducted by independent NGOs showed the wealth gap between rich and poor widened than the pre covid levels. It means people who were economically backward were left economically and emotionally destitute. Although, lockdown may have protected people from covid-19 but it has caused more than 500 deaths due to starvation, suicide and other lockdown induced causes. The sudden announcement of lockdown left migrant workers on the street and some were forced to return to their villages on foot.

Now let's see what we could have done differently. The government should have improved the social and environmental conditions. The public health system could have been more inclusive and robust. Moreover,

the government should have exercised reciprocity when the autonomy of migrant workers and other vulnerable sections were affected. Accordingly arrangements should have been made to provide people with a place to stay, access to clean water, and adequate food grains. Also in order to prevent stampedes, the government should have declared the date of lockdown in advance so that the migrant workers could return to their native place.

Government could have followed a two way dialogue. It could have engaged different communities in the decision making and implementation process. By doing so it would have buttressed the trust of the people who in turn would've actively complied to the stipulated guidelines.



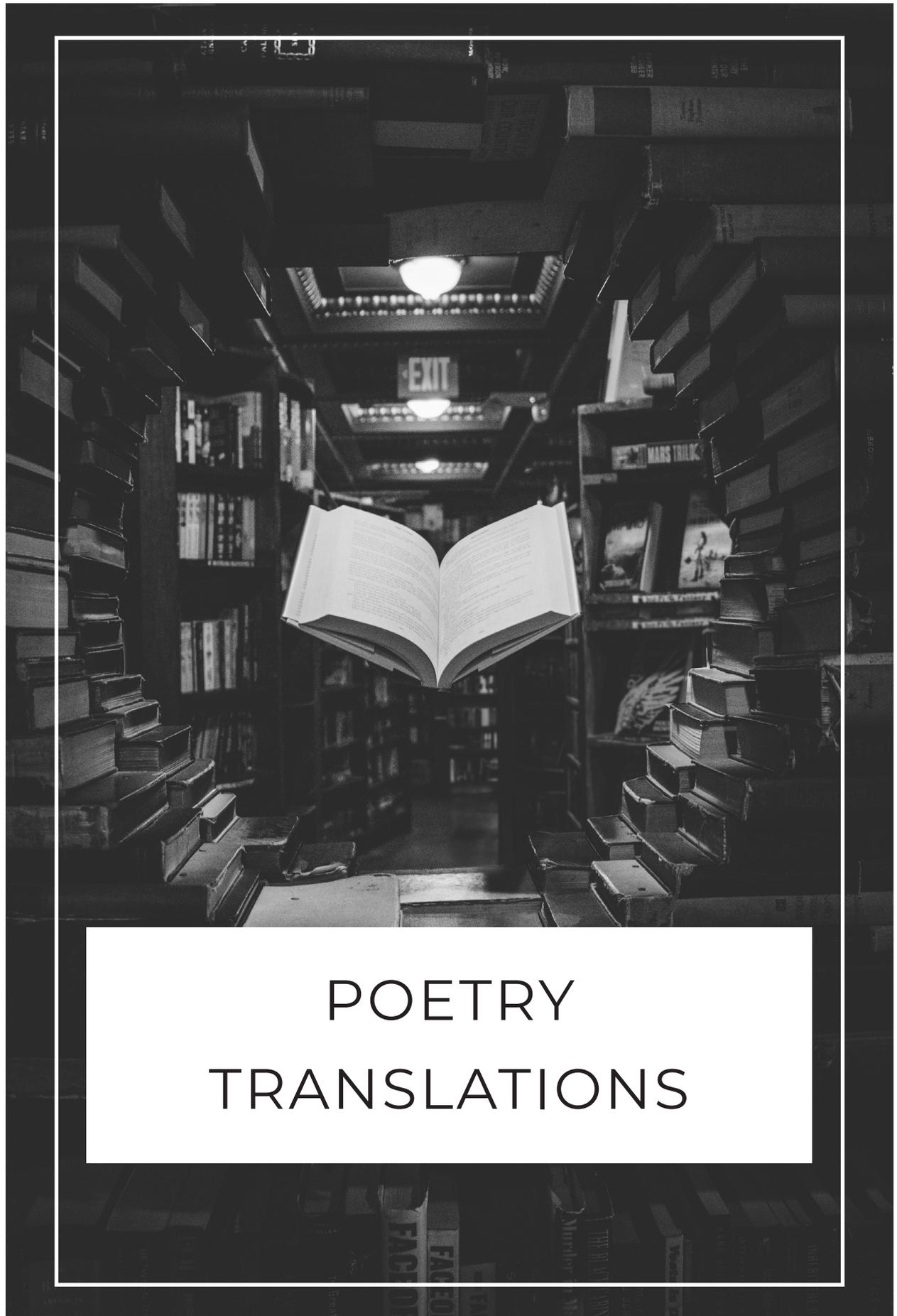
People at the helm of power should have launched additional safeguards for the large section of vulnerable society including the old age people. It was also reported in different parts of the country that the rich and affluent class of people were actively conducting marriages and other social gatherings while the poor sections were made to adhere to restrictive norms stringently. In this context implementation of lockdown should have been equal for all transcending classes and other barriers.

Thus we can say that although lockdown was partly effective in preventing the spread of virus, it rendered many people homeless, jobless and devoid of basic human needs. As India is going through the third wave of pandemic, the states have come to the terms of adopting liberal measures. The government has understood that Covid-19 is here to stay and therefore they can't go to the disruptive method of lockdown each time the pandemic peaks.

AYUSH

B.A. (HONS) HISTORY

2ND YEAR



POETRY
TRANSLATIONS

SALT

A few grains of salt she takes in a jackfruit leaf
 She tips the boiling rice flakes and Grand-mother says, "There's taste only when you add salt."
 It melts and fades and becomes the essence of food.
 She says one day, she will fade away too, but like salt, remain within and be the salt within you.
 My child, I'll never leave you.

Polished, placed on the table in a glass pot, it smiles. I once learned how to make salt from seawater. And then I saw the sea. Rumbling into the bare sand, thinking of her lost progeny, I saw a mother, drowning, dying.

TRANSLATED FROM MALAYALAM TO ENGLISH
 BY SHERWIN SHAJU
 B.A. (HONS) ENGLISH
 2ND YEAR

ORIGINALLY WRITTEN BY: O. N. V. KURUP

FIRST KISS

Two needles of a living rock
 Bloodied, eager,
 Came together, quivering
 I realised:
 I can make a flower blossom.

TRANSLATED FROM HINDI TO ENGLISH
 BY SEJAL ARORA
 B.A. (HONS) ENGLISH
 2ND YEAR
 ORIGINALLY WRITTEN BY: ASHOK VAJPAYEE

MY FACE IS HIDDEN LIKE ADVERTISEMENTS

I'm standing alone with loneliness and love, In the corner of the alley
 Waiting for you
 Thinking about showing my face
 Yet, my face is hidden like advertisements.
 In the blink of an eye, I want to utter some simple words
 The advertisements shine brightly and sparkle in the colourful hidden world
 How one views another, is difficult to understand
 Alas, this exaggeration
 Alas, for my motherland!
 The desire for a glimpse has sold out
 Privacy is studded under neon lights
 The simplicity of words from mouth is lonely
 It dropped at the corner of the alley
 I'm tired of my mask
 Hanging like an advertisement.

TRANSLATED FROM BENGALI TO ENGLISH
 BY OINDRILA GHOSH
 B.A. (HONS) POLITICAL SCIENCE
 2ND YEAR

ORIGINALLY WRITTEN BY: SHANKA GHOSH

LET US ACKNOWLEDGE ALL OUR HEROES

We are from the "Abor" tribe
A tribe of the rivers,
of the state Arunachala
Having won
three fatal battles,
we will not stop until
we win our independence.

And we?
We are "Ahom" of the jungle
another tribe of the North-east,
who will sacrifice our all for our country.
For winning our freedom
Is for us,
the supreme,
the most supreme.

And I?
I am the "Gandhi" of the mountains
The "Black General".
I will give for my country
till the last drop
of my blood.

And thus, they did
These heroes of the Northeast
And together they all said,
Long live India!
Long live India!!
Let us raise our flag!

One day very soon
Will illumine the new lights
of green grass,
after the darkening twilight
And we will reach the horizon.

And thus, they did
These heroes of the Northeast
And together they all said,
Long live India!
Long live India!!
Let us raise our flag!

TRANSLATED FROM SPANISH TO ENGLISH
BY DILIP SHAH
B.A. (HONS) ENGLISH + SPANISH
3RD YEAR

HEROES OF OUR FREEDOM STRUGGLE

The fire of freedom
Had been lit
In every breath of the
Heroes who struggled for freedom

It was not destiny because
of which we got freedom
But it was a gift
Of those who did not even fear the gallows

Confronting every moment
A volcanic life
To be able to give us
A new life
A reformed life

Many were these heroes
Gandhi, Pandey, Bhagat, Azad
And many more
So many that we can't even count
Who gave their all
To attain liberty

They were like a mother is
towards her children
Who without thinking of herself
To them gives her all

They knew very well
That perhaps
They would not be able to
Even see that time
When liberty will be won

Although thus it happened for many
Without doubt
They all survive and will survive
In our hearts
Which to them will ever offer thanks
and yet more thanks.

TRANSLATED FROM SPANISH TO ENGLISH
BY ARPITA SIGNH
B.A. (HONS) ENGLISH + SPANISH
2ND YEAR

ORIGINALLY WRITTEN BY: ARPITA SINGH

WE SALUTE THE NORTH-EAST HEROES

Many were the freedom fighters from the Northeast India who had made a great contribution and we salute them we must with all our heart.
Haipou Jadonang who was hanged on false murder charges by the British officials.
Tikendrajit Singh who was publicly hanged while protecting the state against British imperialist design.
The power of merciless killing even reaches to the social leaders as well.
Rani Gaidinliu who was sentenced to life imprisonment because she spread knowledge that "We are free people; the white men should not rule over us."
Tirof Sing, chief of Nongkhlaw who died in captivity of British force defending his fellow men.
Paona Brajabashi taught us that better it is to be a snake head than to be a dragon tails.
He welcomes death more than treason in the Battle of Khongjom.
U Kiang Nangbah A freedom fighter
from Meghalaya who was hanged,
Pa Togan Sangm a warrior and leader from Garo hills, who died battling British forces,
To many heroes are forgotten that it is impossible to glorify them in a page.
The british ruled us in the name of security
but security it was not,
but the prison what it was.
The darkest place is right beneath the candle.
So many from different parts of the country struggled to get our freedom.
and we acknowledge them all and offer them our gratitude with heads bowed down.

TRANSLATED FROM SPANISH TO ENGLISH
BY RIYAN ZIMIK
B.A. (PROG.) ENGLISH + SPANISH
3RD YEAR

ODE TO LIBERTY

That we had gone mad.

Is what many said but for us. It was the most significant thing that could ever be it was our freedom. There were martyrs, who lost their lives much before their time. But those sacrifices gave us Independence.

There were amongst them those who were called extremists but the purpose was supreme. The purpose was our independence from those cruel tyrants, whom we had to throw out. Force them to leave we had to out of our country, that they should flee forever from this land of ours.

Amongst these heroes was Bhagat Singh, who left his family, who abandoned his love, who gave up on living his life, to win our Independence.

TRANSLATED FROM SPANISH TO ENGLISH

BY RIYAN ZIMIK

B.A. (PROG.) ENGLISH + SPANISH

3RD YEAR

MAKTUB



मैं उजालों से घिरी हुई
 तसव्वुर में
 उरूज देखती हूँ,
 हर गुल है खुशनुमा
 बहार का मौसम है
 यहाँ की हवाओं में
 मोहब्बत का आलम है
 हर सम्त देखा
 कुर्बतें ही कुर्बतें हैं
 ना अदावतों का ज़िक्र
 ना कहीं अदावतें हैं
 इस खयालो के जहाँ में
 कोई भी इंसान
 इंसानियत का नक्राब
 नहीं ओढ़ता
 हर शरख्स वही है
 जो दिखता है
 और मैं
 दिल को बह लाने के लिए
 तसव्वुर को हकीकत
 समझ लेती हूँ...

PUNYA

B.A. (HONS) JOURNALISM

3RD YEAR

जिंदा

मैं उजालों से घिरी हुई
 तसव्वुर में
 उरूज देखती हूँ,
 हर गुल है खुशनुमा
 बहार का मौसम है
 यहाँ की हवाओं में
 मोहब्बत का आलम है
 हर सम्त देखा
 कुर्बतें ही कुर्बतें हैं
 ना अदावतों का ज़िक्र
 ना कहीं अदावतें हैं
 इस खयालो के जहाँ में
 कोई भी इंसान
 इंसानियत का नक्राब
 नहीं ओढ़ता
 हर शरख्स वही है
 जो दिखता है
 और मैं
 दिल को बहलाने के लिए
 तसव्वुर को हकीकत
 समझ लेती हूँ...

SEJAL ARORA

B.A. (HONS) ENGLISH

2ND YEAR

बदलती तस्वीर मेरे गाँव की

दिख रही थी साखियाँ मेरे गाँव की,
ओझल हो रहे थे रस्ते मेरे गाँव के

दिख रहे थे अब्र मेरे गाँव के,
उड़ रहे थे परिंदे मेरे गाँव के

आ रही थी खुशबू में मिट्टी मेरे गाँव की,
उजड़ रहे थे बाग मेरे गाँव के

थम चल रही थी आँधियाँ मेरे गाँव की,
जब जल रहे थे रिश्ते मेरे गाँव के

शादी हो रही थी मेरे गाँव में, हाशिए पर हो गए
बुजुर्ग मेरे गाँव के

बारिश होने लगी मेरे गाँव में,
अशक बहने लगे मेरे गाँव के

बरसी होने लगी एक बुजुर्ग की, नए मुँह बनने लगे
मेरे गाँव के

खत्म हो गया मिलना मेरे गाँव का,
सिमट कर रह गई आवाज़ मेरे गाँव के

BALWANT GAUD
B.A. (HONS) HINDI
2ND YEAR



मेरी ज़िंदगी में उतर, मेरी रग-ए-जाँ में उतर
ऐ खुदा तू भी कभी मेरे इम्तिहाँ में उतर

ऐ हकीकत के उजालों में भटकते हुए दिन
ख्वाब बन कर मेरी आँखों के शबिस्तान में
उतर

यूँ लब-ए-साहिल अल्फ़ाज़ मुझे देख मगर
मुझ से मिलने को मेरी ज़ात के तूफ़ान में उतर

रक्स-ए-खुशबू में बिखरने से निखरने के लिए
आ मेरी खाक-ए-तमन्ना के बयाबान में उतर

मेरी ज़िंदगी में उतर, मेरी रग-ए-जाँ में उतर
ऐ खुदा तू भी कभी मेरे इम्तिहाँ में उतर

AWAN IRFAN
B.A. (HONS) HISTORY
3RD YEAR

HORIZONS

Where it all ends,
 Is where it all starts,
 I see a meteor shower in the sky,
 Raining from the sky, uncountable silver darts.
 Pink and Blue and a shade of Green,
 I saw a majestic butterfly as it fluttered by,
 I opened my arms to welcome in the dark,
 Hugged by a thousand pretty fireflies.
 I see a ray of hope in the form of light,



Coming from under the valley,
 Though It ignored me like a vacuum,
 With hope certainly I no more tally.
 My legs are falling free,
 I can't hear anybody,
 Your screams are all lost in shadows,
 All I hear is my own Melody.
 And I don't care anymore,
 If I don't reach my shore,
 I am happier by myself, on the horizon,
 I was devastated beyond repair before.
 I aimed for the sun,
 I reached on moon,
 All your curses failed,
 Fake were all those boons.
 Sitting at the end,
 I can't see a start,
 Oh meteor shower, Oh shooting stars,
 Hit me with a silver dart!

ARYAN

B.COM. (PROG)

2ND YEAR

THE CHASE

I'm running, forward,
 Left and right.
 Swaying with the wind.
 Like the leaves on a windy day—
 One porch to another.
 Embellishing one window,
 Dirtying the other.
 As I run and run endlessly
 I find nowhere to reach.
 I see the bushes pass by in a hurry,
 I see the young ones seizing each moment.
 Rushing out, and fooling about.
 I slow down remembering the days:
 Days of my innocence and joy.
 The time full of dreams,
 And the time was full of ecstasy.
 But I'm struck again
 'Coup de foudre'
 And the hurricane in my mind.
 I run and run and come to the realisation
 That I can never stop this run,
 For guess who I am running from?
 My own self it is.
 My mind, my thoughts,
 My heart and my soul,
 Deep rooted with the wounds:
 Incurable, unfathomable.
 So harsh and rough,
 But running may shush them, I believe.
 And this chase of my mind seems endless.
 So I'm running forward,
 Left and right.
 I'm running towards the infinity
 Till the soul finally melts away,
 Vanishes away, and withers away.

PARISHA THUKRAL

B.A. (PROG)

1ST YEAR

URI

I have difficulty breathing some days
 And he knows it
 But nobody addresses the difficulty
 And we keep on going
 I feel cold at times
 And so he sits next to me
 I wanted to ask him
 Don't you feel cold in a thin shirt
 Spending all day staring at me
 I feel lonely at times
 But he assures me
 "Just a lil' while love
 You won't be alone for long
 I just have to finish this project from my office"
 I give a smile
 Unsure if he can see it
 But I know he feels my smile as he speaks
 I feel empty
 But he gives me flowers everyday
 He comes to me
 Cleans me, brushes my head
 And looks at the floor and says
 "I hope its not hard enough
 I hope it does not hinders your sleep
 For I know how much you value it"
 I feel lucky to have this man with me
 I feel my weight loss
 And he worries
 I want to question him
 Is it because I won't be beautiful after losing weight?
 He as if reads my thoughts before I think, says,
 You will forever be beautiful.
 I wanted to ask him how his day went
 But he beats me to it
 I want to scream some days
 I want to fill the skies with my shrieks
 But he caresses and says
 I know how you feel
 But don't hold grudges
 And he gets up to leave
 I want him to stay
 So he turns back and says
 "I too don't want to leave you
 But the graveyard is about to close,
 I'll come tomorrow with your favourite poppies"
 and so I wait silently.

 DEEPTI CHAUHAN

B.A. (HONS) ENGLISH

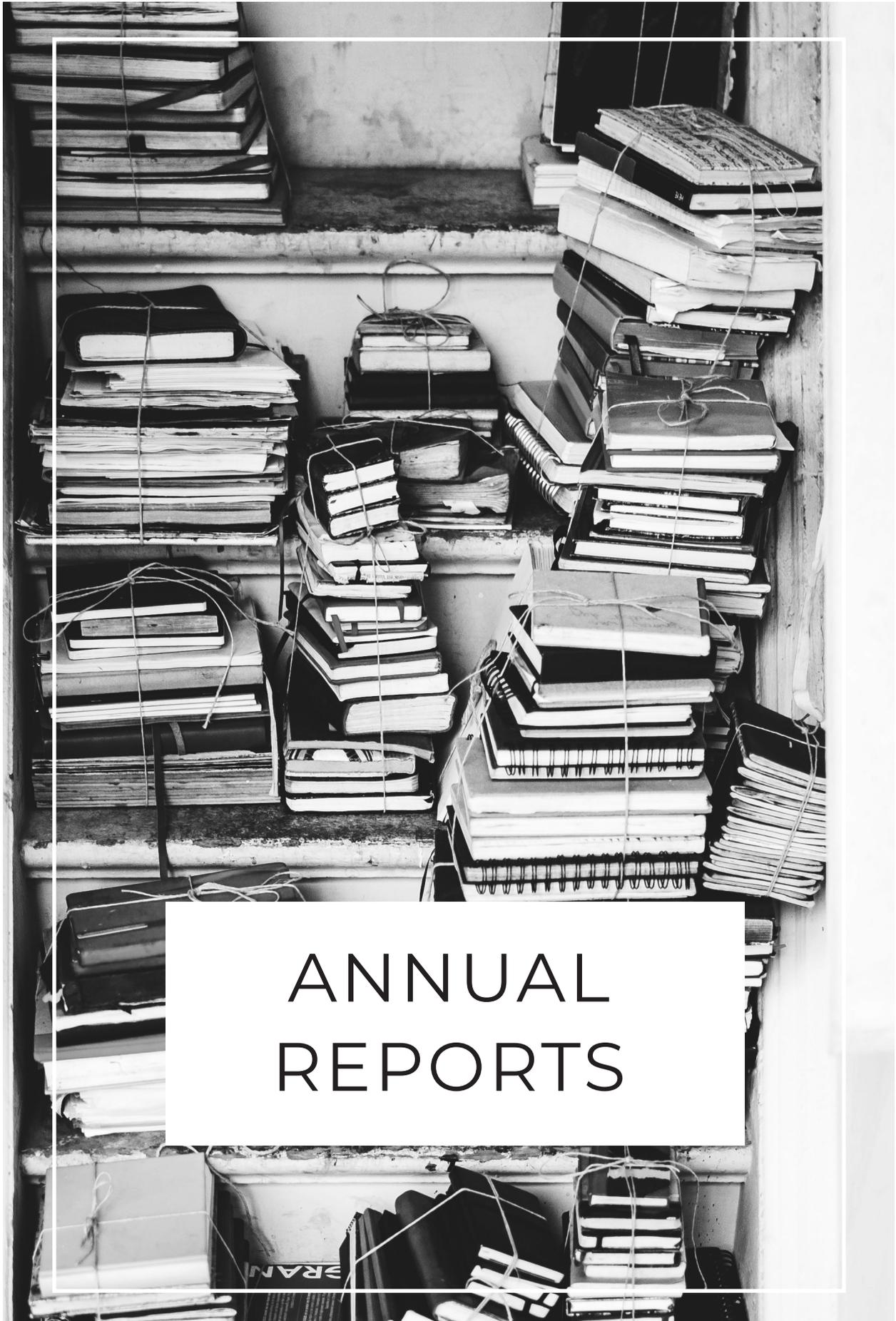
2ND YEAR

In my dreams we walk again
 And pick up the scattered remnants
 Of our ancestors, to build murals
 And alarm bells,
 We do not chant names anymore
 Or walk miles for unanswered prayers
 When I fall asleep
 Fences collapse and borders shatter
 And we smile when we run
 Sprinting past crumbling buildings
 Past whirs of dying tanks
 And shells of grenades
 Into broken forts and narrow alleys
 That lead nowhere at all
 And we sit amidst the dying crowd
 Of terrified kids and battered adults,
 Huddled together
 Awaiting the end
 Smiling still as they shiver
 When I lay down my head,
 I hear early goodbyes and last wishes,
 I once witnessed a war in my dreams
 Spilled blood and ruthless humans
 Pretending they could live long enough
 To live stolen lives
 When I closed my eyes
 I heard rings of gunfire
 And cars ablaze with flames
 I watch now as lightning falls
 And see the kids embrace
 The sins they never witnessed
 When I stumble from one nightmare to another
 I watch the world break into stars

 SHRUTI BATHLA

B.A. (PROG)

2ND YEAR



ANNUAL REPORTS

CLICKS (THE PHOTOGRAPHY SOCIETY)

Clicks, established in 2010 by two shutterbugs, Laveesh and Rudransh, with the vision of creating a space for photography lovers has brought together more than 60 people who form a part of the Clicks family now. It was initiated to build a platform where all the photographers could come and share their own unique and creative ideas of photography. Every year, the society organises multiple photowalks, trips, and workshops to promote learning with fun. We have had the pleasure of getting featured as one of the top 5 photography societies of Delhi University on popular media platforms like SoDelhi and DU Express.



We successfully conducted 4 photowalks in the year 2021 to Agrasen Baoli, Bhuli Bhatiyari/Central Ridge Reserve Forest, Jamali Kamali Fort, and Tughlaqabad Fort.

On our last photowalk of the year, we also held a workshop with Mr. Ashutosh Bindra, a Delhi-based travel/portrait Photographer and Cinematographer. It was a very insightful and inspiring session.

We also organised a memorable trip to Manali, Himachal Pradesh in October 2021. During the trek to Bhregu Lake, the members had a chance to practice various photography styles like street, landscape, and travel photography. It was a way of reconnecting ourselves to nature in these difficult times and it proved to be a healthy and peaceful break from our digitally struck lives whilst being able to hone our skills.

Our members also remained thoroughly active by practising various techniques, even in the lockdown. This kind of hard work and dedication made it possible to receive a certificate for Click Rights Campaign by CRY India.

Clicks further managed to work very efficiently and diligently even in the online mode. Many events were organised and successfully executed by the team. We maintained our online presence on Instagram by organising an online competition '#clicksinlockdown'.

We also collaborated with the NSS unit of our college twice and organised a photography competition on the theme: Through the Lens. Further, we participated in competitions like an event on Food photography by Logify India and a Street Photography competition organised by Ikhtiyar Photography Society, NDIM. We also celebrated Literacy Day by providing the opportunity for students to showcase their photography skills in partnership with the photography society of NDIM.

An event by the name 'Blinding Lights' was also organised in collaboration with Logify India on the theme of night life.

DASTGAH (THE MUSIC SOCIETY)



Team Dastgah at Concord'20

Dastgah was established in 2015 by a group of students who wanted to create a platform for everyone to display their musical prowess and learn from other people by performing in events and participating in competitions, not only at the level of the University but throughout the country. Since then our society has moved from strength to strength; from having one group competing in a few competitions to having three full-fledged groups, namely our fusion band, western acapella and Indian classical choir.

Our teams have participated in and hosted several events. Our Indian choir and western acapella groups have participated in outstation competitions at BITS Pilani. The western team also performed at IIT Delhi and AIIMS Delhi. Our western acapella bagged the 1st position at Ram Lal Anand College, DU and 2nd Position at Maitreyi College, DU in 2020. Numerous prizes were bagged in the Western solo category and Instrumental categories as well.

Every year our college organises fests, Ambrosia and Panghat, where students from different colleges in the DU circuit participate. 2020 marked the third edition of Panghat, making it another successful fest, comprising the best talents that the DU circuit has to offer. Dastgah held its third rendition of Concord, the collection of the music events in Panghat. Four competitions were held in total in a variety of domains of music inviting the pristine talent of the music circuit of Delhi University to showcase their prowess. Three group competitions were held, having about 100 participants in each group event, with teams being selected after careful consideration in regards to composition, stage presence, technicality and many more aspects. Along with the group events, one solo event was organised, having 15 of the best classically trained singers. These were handpicked from a group of 40 students, who had applied for a chance to perform at our college. "Battle of bands", the band competition invited full-fledged bands to perform their original music, rivalling that of professionally trained musicians, having diverse genre influence on Day 1. 'Cadence', the Western Acapella Competition showcased the upcoming Acapella groups of the DU circuit performing their arrangements of classical and pop music, using only their voices to generate some unbelievable sounds. Delhi University is one of the flag bearers of making Acapella a mainstream activity, and we are proud to contribute to that goal as much as possible. Western Solo was the first time our music society hosted an event of this type. The number of participants was quite overwhelming. Talented artists from different colleges came up and performed with such great passion and emotion throughout. With varying tonality and vocal control, the singers surely contributed immensely in making this an exhilarating experience. Many performed their rendition of famous soul, blues and pop songs.

DRIFT UP (THE DANCE SOCIETY) LEHER (THE DRAMA SOCIETY)



"What's dance?" they ask; we say it is the hidden language of our soul.

A dance society needs space and music but only with its members can it function smoothly. We knew it wasn't going to be easy to manage sessions online but the team's efforts made it a wonderful experience to cherish.

The society was led by a 3-Members Council. Shashank Rawat from History (Honours) as the President, Korisha Tandon from BA Prog as the Vice-President and Shatakshi Pachauri from BA Prog as the General Secretary were appointed as the council members. Driftup has had an amazing journey this year with its own ups and downs and we managed all with our regular practice sessions and the hard work of the entire Driftup team. Due to covid restrictions, the team could not participate in any competitions as a team but individual members represented Driftup in different competitions namely - 'Drop a Beat' at Nirma-IM, 'Natrajan' at IIT Dhanbad, 'Waving battle' by House of a 1000 waves and won a SPECIAL MENTION at Natrajan organised by IIT Dhanbad. The society performed well and gave its best even in those unprecedented times and with the situation coming back to normal and the enrollment of talented students in the new batch, we hope Driftup will prosper in the coming year.



LEHER- The Drama Society of Delhi College of Arts & Commerce had yet another year of success. Carrying on the legacy of its founder's undying will to persevere in good spirits, Leher, this year too, despite all the difficulties arose due to covid restrictions, won immense appreciation and critical acclaim in the Delhi University Theatre circuit. Even during those tough times, the undying will of all its members helped Leher achieve its goal.

The society had its Annual street production of the play, "Shravan Kumaar" which was written and directed by the members of the society. The play highlights the issue of elderly abuse in India. This street production earned a lot of appreciation. It even got selected for the finals of Mood Indigo-IIT Bombay, Asia's largest Cultural festival. We also performed at the annual festival of Sharda University and won first prize. Our performance at Noida Rang Mahotsav won three awards. Leher also made an online play highlighting the issue of "Toxic Productivity". The society worked on various short stage plays as well. This session was great for Leher, where the society tackled all the problems with an abounding love for theatre and a common goal of spreading awareness to its audience.

MAKTUB (THE POETRY SOCIETY)

“He who draws noble delights from the sentiments of poetry is a true poet, though he has never written a line in all his life.” — George Sand *The Devil's Pool*

Maktub, the Poetry Society of Delhi College of Arts & Commerce was established in 2018 by Prateek Gangwal. 'Maktub' by definition means "it is written", which beautifully denotes what this bilingual Poetry Society does. The society has made a great splash even after being one of the youngest societies of DCAC.

The Society organises various regular poetry sessions where members express their feelings and emotions in rhymes and in prose as well. We share our denotations, the same as the beauty of poetry itself, that one verse can have infinite meanings to anyone who hears it.

We organise and participate in competitions like Slam Poetry or Open Mic. Maktub is known for its Annual Poetry Slam – Riwayat, which could not be conducted this year due to the pandemic restrictions.

In the times of Covid-19, when many of us felt lost and frustrated with our mundane and difficult lives, Maktub organised an Online Poetry Competition – Cosmopoetica on March 5, 2021. It was organised in collaboration with National Service Scheme (NSS) DCAC as a part of their Annual Social Fest, Aadya. The theme for the competition was 'Social Issues' and as a result, the event became an accurate reflection of the society that we live in. The competition turned out to be extremely big that it was almost impossible to select the top three entries. Lakshay Anand won the first position and U S Vidisha and Sundar Singh secured second and third prizes respectively.

The event was a success and received an overwhelming response and participation from many talented poets and writers.



STYLUS.INC (THE FASHION SOCIETY)



Stylus.inc, the Fashion Society of Delhi College of Arts & Commerce, is a place where we believe in the idea of diversity and work towards making a beautiful, creative and safe space where one can explore the world of fashion through the eyes of their own imagination. Even though this year has been rough and emotionally deficient for everyone, we as a team stood up and decided to continue our journey with the motto to break stereotypes and every other scrutiny that holds back an individual from expressing who they are and what they can become. By the end of 2020 we bid farewell to our lovely members from the batch of 2020–21, who not only continued the hierarchy but also provided us with a unique set of idealism that helped us grow better. With our new team and heads at stage we acted as a cohesive unit and focused on the online ways and resources to reach more and more people. Through our social media platform we started creating reels and pamphlets. With the constant efforts of departmental heads, presidents and our members, we organised various events including a photoshoot at Lodhi Garden on fusion theme. Depicting the grace in heterogeneity, this photoshoot showcased the message that one may be any size, colour, race, gender or culture but they are unique in their own ways. During the year, our member Sanya Vij won a title under ‘FESTIVE LOOK 2021’ organised by Glitterati NDIM and made us proud. Adding to the stars, Aarshiya Grover, a very prominent contributor to our society acquired the winner’s badge for ‘BEYOND BOW & TIE – VINTACHE’21’ organised by the Fashion Society of Hansraj College followed by Riya Mudgal, who in December 2021 won a title in an event organised by IBS Gurgaon.

वार्षिक रिपोर्ट (विवक्षा)

विवक्षा दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स (दिल्ली विश्वविद्यालय) की हिंदी वाद विवाद समिति है। इसका उदय हाल ही के वर्षों में हुआ है (२०२०)। विवक्षा की संरचना के पीछे मुख्य कारण था एक ऐसा मंच प्रदान करना जहां प्रत्येक सदस्य को, चाहे वह किसी भी विचारधारा का हो अपने आप को अपने विचारों को विभिन्न मुद्दों पर खुल कर रखने, बहस करने, समझने तथा मंथन करने का मौका मिल सके।

विवक्षा में प्रत्येक माह में दो बार मीटिंग बुलाई जाती है। पहली मीटिंग में मॉक संसदीय वाद विवाद एवम् दूसरी में चर्चित खबरों पर एक समूह में चर्चा की जाती है।

समिति दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों में होने वाले अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लेती है साथ ही यह अन्य विश्वविद्यालयों जैसे की बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्व विद्यालय आदि में भी भाग लेती है।

इस वर्ष भी विवक्षा ने कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया साथ ही साथ विजयी भी रही। हर वर्ष समिति अपना वार्षिक संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता आयोजित कराती है जिसे "तर्कमंच" के नाम से जाना जाता है। जिसमें विभिन्न कॉलेज भाग लेते हैं।

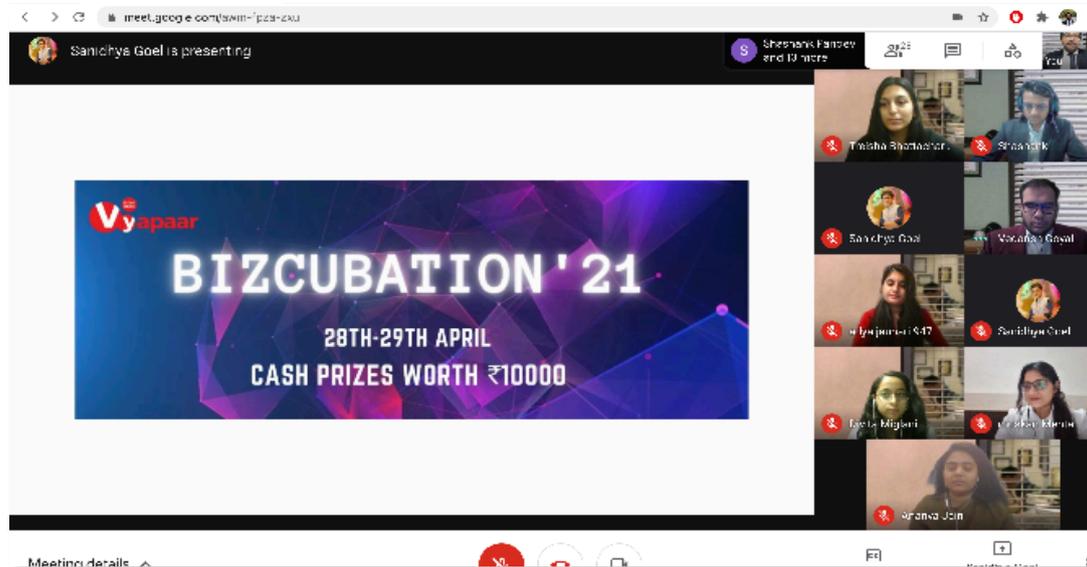
विवक्षा जितनी नवीन ही उतनी ही तेज गति से प्रगति करते हुए एक समरणीय छाप छोड़ रही है। आशा है की भविष्य में भी विवक्षा इसी तरह प्रगति के पथ पर कायम रहेगी।

THE ENGLISH DEBATING SOCIETY

The English Debating Society actively participates in an array of healthy debates and discussions which encourages questioning, talking about and changing of personal narratives, beliefs and mindsets. The society endeavors to provide an open, comfortable, inclusive and a safe space for people from every background and identity on equal grounds which is a pre-requisite for healthy discourse. This helps in increasing the perspectives and ideas of the members, thus making it a better space for all. The members of the society are open with their worldviews and frequently indulge in in-house mock debates as well as cross mocks with debating societies of the other institutions. The members regularly participate in debating tournaments organised by different institutions in the capacity of debaters and adjudicators. The Fifth Edition of Mukalma '22, the annual flagship Asian Parliamentary Debate of the Debating Society of DCAC was hosted by the society from 21-23 April, 2022. The tournament was a roaring success despite having to shift it to online mode without prior notice. It received the participation of students from institutions from all over the nation.

The Debating Society had a stellar year and managed to accomplish a ton of achievements despite the continuous online and offline transfer of tournaments due to the pandemic.

VYAPAAR, THE ENTREPRENEURSHIP CELL



Vyapaar Team at Bizcubation'21

Vyapaar organised multiple events during the 2021–22 tenure under the leadership of President, Astitva Bajaj and Vice President, Treisha Bhattacharyya. Vyapaar Bazaar was an ambitious project by the team wherein they made an Online Marketplace for small business owners to help them overcome the difficulties faced by them because of the pandemic. VyapaarBazaar.in worked just like Amazon or Flipkart for small businesses and one could login to the website and order products from these businesses, and 100% of the proceedings would go to the business owner directly. With over 19000 page visits, the event was a huge success and helped 60+ businesses.

The Cell organised a very insightful webinar on developing Sales Strategy for an Online Business by Mr. Shivankit Kumar, Co-Founder FTS. The webinar was attended by Online business owners and student run business owners from all the top colleges of University of Delhi. The participants were issued Certificates from Bangalore-based startup, First Main, for attending the workshop.

The cell also organised an annual competition, BizCubation, a diverse 3 stage Business-Plan, that tested the participants on their business acumen, critical thinking, ideation and pitching skills. The Judge for the event was Mr. Daksh Sethi, TedX Speaker, Founder of Guby Rodgers, and Instagram Personality with over 80,000 followers. The event received 350+ registrations from colleges all across India including top colleges like SRCC, and IIM Ahmedabad. The annual Internship Fair was also organised by the team. The Fair was conducted on an online platform by creating a website where students could log on to, and apply to internships and live projects directly. Over eighty companies participated and more than 550 applications were received for the internships.

In spite of being an online tenure, full of unforeseen challenges, Vyapaar's 2021–22 tenure has been one of the most successful years in the society's history. The society saw growth in terms of national reach, quality of events, and got recognised for it by the top universities of India.

GIRLUP DCAC

The Future is Equal and Beautiful

Taking its roots in 2020, GirlUp DCAC has pioneered five projects towards a better future. Founded under the wings of GirlUp United Nations, the society seeks to address issues pertaining to gender inequality and its intersections. Even after being established during the times of a pandemic, the society voiced its opinions and changed the narrative on various subjects through powerful posts and informative live sessions.

Drawing along the lines of values such as women empowerment, gender equality, gender-based violence, education of the girl child, supporting underprivileged femme communities, five projects were undertaken by us which included:

Project Triyarth– The project Triyarth was initiated by GirlUp DCAC to propagate and promote female financial literacy. Triyarth, a culmination of words ‘triya’, which means women and ‘arth’ representing finance, sought to inculcate the discipline of financial independence amongst women that remain dependent on their male counterparts for financial handlings. We also surveyed to gauge the penetration of financial literacy amongst women of all ages.

Project Strivada – Project Strivada aimed to create self-awareness about feminism and distinguish it from pseudo-feminism. Pseudo feminism that has originated in recent times has often tried to discredit the essence of feminism and build a bad rapport for it and Project Strivada stood against all this misinformation and aimed to promote what real feminism entailed. We sought to abolish any miscrediting myths and in place propagate the truth.

Candor Convo – Under this project, we took it upon ourselves to raise awareness about how caring for yourself isn’t being selfish or running away from your responsibilities, but rather loving yourself and healing with all that you’ve got. In a very successful webinar, we also invited Ms. Amarjeet Kaur, a counselling psychologist, to share her insights on the basics of mental health and its deterioration during the pandemic.

Pinktober – To debunk the myths and spread awareness about Breast Cancer, we conducted an Instagram Live on the pink month of the year. Dr. Shubha Sinha was invited as our speaker, and she helped to introspect the aspects, challenges, and remedies associated with Breast cancer.

Unstoppable Naari – This project was our fight against societal expectations of women and their will to carve themselves out of a distinct place. This was for all the brave women who did not let intimidation stop them from doing what is best for them! Through the project, we aimed to point out the treatment of women in the workplace and how they have overcome and risen above it. We celebrated the exemplary women of today who went above and beyond to break the binds and establish themselves on the pedestal of achievements.

Adding to our successful year, we launched our very own website that highlighted all our achievements, projects, and ideas and insinuated all the great things to come!



PRAKRITI (THE ENVIRONMENT SOCIETY)



Under the directives of the Environment Ministry, Prakriti, the Environment Society Department GNCTD, celebrated an eco-friendly Ganesh Chaturthi on the 2nd of September 2021. The volunteers of the Prakriti society attended lectures on the “Elimination of Single-use of Plastic”, organized by The Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the National Museum of Natural History as part of ‘Azadi Ka Amrit Mahotsav’ by Shri Bhupender Yadav, Hon’ble Minister of Environment, Forest and Climate Change and Shri Ashwini Kumar Choubey, Hon’ble Minister of State, Environment, Forest and Climate Change, Government of India held on 4 October 2021 and also took the Green Pledge. On 5 October 2021, students shared information from Earth News on how climate change affected the brightness of the Earth. To mark the International Climate Day, Prakriti organized an online Slogan Writing and Poster-making competition on 22 October 2021. Prakriti also shared posts, on their Instagram page, on Diwali, Durga Puja and Dussehra, highlighting the core issue of pollution. The society also observe the Vigilance Awareness Week from 26 October 2021 to 1 November 2021 with the theme of “Independent India & 75: Self Reliance with Integrity”. The volunteers of Prakriti conducted a cleanliness drive for both, in-campus and out-campus area. The first drive, “There is no Earth B” was conducted on 27 November 2021, and 31 kg of plastic and 75 kg of non-plastic was collected from Delhi Ridge Forest area. The second drive was conducted on 8 April 2022 at Yamuna River Front, and 48 kg of waste was collected. To celebrate the Republic Day of India, the society organised three games based on Word Search, Scribble, and Crossword on 29 January 2022, under the title, ‘Play for Eco’. Prakriti celebrated ‘Ecolution’, its Annual Festival on 21–22 April 2022 in which webinars by Professor Pragya Parijat on the history of Environment Laws in India and Mr. Sopan Joshi on “Why Environmental Politics leave us Helpless!” were conducted. It was followed by a reel-making competition titled Eco-Shots, a debate on climate justice, and a posters-making competition on the theme ‘Say No to Plastic’. On 7 June 2022, an online training program of the Delhi Jal Board was hosted by Water Digest. Under the guidance of Ms. Reeva Sood, an eminent sociologist and expert in herbal gardening, also a member of Governing Body of the College, the project Agri- Tourism was initiated. Its Orientation program was held on 6th June and was attended by the volunteers of Prakriti.

DEPARTMENT OF COMMERCE: VANGATI- COMMERCE ASSOCIATION



Vangati inaugurated its annual Intra-society fest “Among Us 2022” in February 2022. It consisted of different departments putting up their events and competitions. Vangati had the second edition of its annual festival “COMMFETE 2022” in April 2022 consisting of six knowledge enhancing events such as “CapiogAgnitio: The Policy-Making Competition”, “Shipwreck: Debate for Your Life”, “Bullish Bankers: A Mock Etocck Event”, “Fut Mania 2.0: The Ultimate Bidding War”, “Clueminati: The Scavenger Hunt”, and “Bizmarket: The marketing Event”. These events witnessed the participation from many prestigious colleges as well. Vangati also organised a few events in collaboration with various other societies of the college, like in collaboration with Debsoc – The Debating Society of DCAC, it organised the event – “Checkmate – The Economic Debating Competition” on 19th September 2021 and with Adroit: The Advertising Society of DCAC, under the aegis of IQAC, celebrated the spirit of “Azadi ka Amrit Mahotsav”, and also conducted “Vagvistar: The Slogan Writing Competition” on 13th October 2021. Some other events conducted by Vangati are “Writer’s Lane: The Article Writing Competition” (October–November 2021), and “Picturesque: Photography and Caption Writing Competition” (August 2021).

The Department of Commerce organized several Webinars throughout the year 2021–22. Some of the topics of the webinar are “Credit Ratings in India” by the esteemed speaker, Mr. Sudip Sural, CEO, CARE Advisory Research and Training Limited (CART) on 30th July 2021, “Disruptive Innovation” by Mr. Manoranjan Ram– Vice President, Sales and Marketing, SMS India on 6th August 2021, Sexual Harassment of Women at Workplace Act, 2013 by Dr. Rajulben L. Desai– Member, National Commission for Women on 17th August 2021, “Film Making in Digital Era” by Prof. Sidharth Mishra and Mr. Rochak Sahu, organised on 26th August 2021. A webinar on “Career opportunities, Post Pandemic and Importance of Soft Skills” by Prof. Vijay Kumar Shrotryia, Department of Commerce, Delhi School of Economics was organized on 17th September 2021 and on “Entrepreneurship, Innovation and Startup” by Dr. Sunil KR Pandey– Director (IT and UG), I.T.S Ghaziabad and a Webinar on Career and Business Sensing Idea by Prof. Saurabh Saxena– Department of IT, I.T.S Ghaziabad was organized on 21st September 2021. The department also organised a webinar, under the banner Azadi ka Amrit Mahotsav on “Police Imaging: Changing Perspective of Police Among Public in India” by Mr. Suvashis Choudhary on 21st January 2022

DEPARTMENT OF ECONOMICS

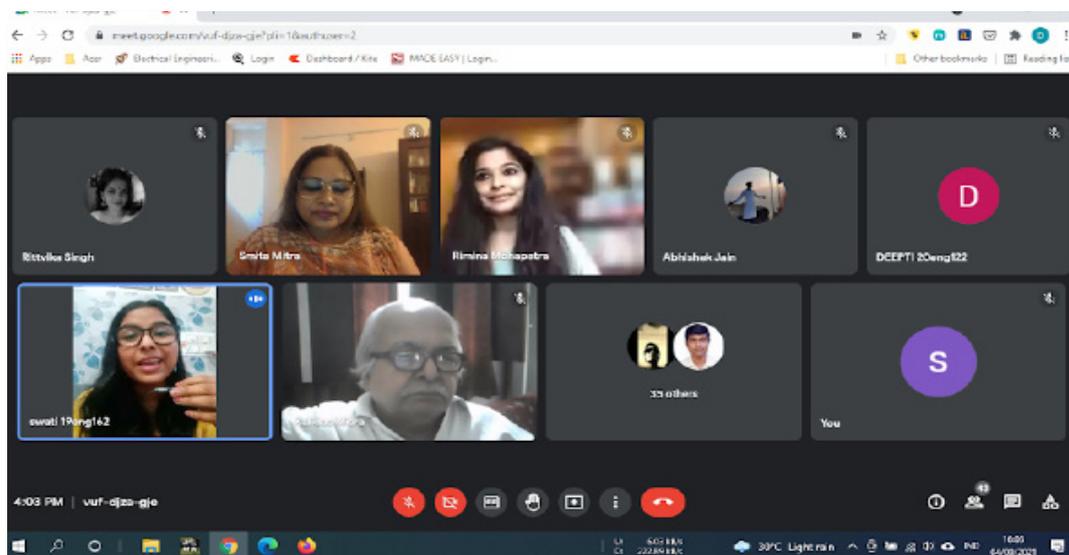
The Department of Economics organizes various events and webinars all year round, some of which include, a webinar on “Vikas ka Swadeshi Model: Swadhinata Sangram se AajTak” by Professor ADN Bajpai, an essay writing competition in association with IQAC, a webinar on the topic “Untangling Kerala’s COVID-19 Conundrum” by Dr Navneet Manchanda, a webinar on the topic “India’s agriculture marketing system and implications of repealed farm laws” by Professor Seema Bathla and a slogan writing competition as a part of Azadi Ka Amrut Mahotsav on the topics such as “The impact of the pandemic on mental health”; “Tackling drug abuse among youngsters”; “A healthy atmosphere—the future we want” and “Compromising nature for the sake of festivals”. The annual festival of the Department of Economics, “Montage of the Best”, also saw participation by a good number of students in its events – Write-it-up: An Article Writing Competition; Meme – o – nomics: A meme making competition; and Young Researcher’s Meet: a Paper Presentation. The Department also releases an annual newsletter, Ecosystem, as a consolidation of the department’s efforts of the academic year.



DEPARTMENT OF GERMAN

The Department of German under the aegis of IQAC, DCAC organized a Webinar highlighting 75 Years of Indo-German Collaboration in the Field of Education on 24th September 2021. The department also coordinated with “Magic Billion” – a talent management firm for a webinar on 25 February 2022 to provide information regarding various job opportunities available in Germany to the students.

DEPARTMENT OF ENGLISH: ENGLISH LITERARY ASSOCIATION



The ELA events for 2021–2022 started with celebration on Women’s Day on 8th March 2021. The goal of the celebration was to create awareness of a gender–equal world which was done through sharing of writeup and poems on the department's Instagram handle. It was followed by the celebration of Pride Month in which ELA showed their support for Pride via sharing empowering posts on Instagram. The department organised a lecture on “The Long Shadow of Gandhi” by Dr. Gautam Choubey, Assistant Professor, ARSD College on 4th August 2021, to celebrate Azaadi ka Amrit Mahotsav. A series of talks were organised throughout the year. Some of those are a talk with Ms. Rimina Mohapatra, Academic Publishing Manager, Routledge, and Taylor and Francis on “The Hitchhiker’s Guide to Publishing” on the 4th of September, 2021, on the “Cultural and Aesthetic aspects of Utopia in Gandhi’s Writings” by Professor C.S. Dubey from Shaheed Bhagat Singh College on 18th September 2021 to celebrate Azadi ka Amrit Mahotsav, a talk on the “Approaching European Classical Literature: A Historical Overview” by Dr. Lalit Kumar, Assistant Professor, DDU, on 28th October 2021. ELA also organised a Slam Poetry competition on Odes on 18th November 2021 and on “Unsung Heroes: Role of Women in India in the Freedom Struggle” on 24th January 2022. An Orientation Programme on “Higher Education Opportunities and Other Academic Programs” in Manav Rachna International Institute of Research and Studies, Faridabad on 29 April 2022 by Dr. Jyoti Sharma was also conducted by the department.

The annual festival of the department, Pantheon’22, was virtually conducted on 28 February 2022. The theme for the festival was “Exploring Literature in Bhashas”. The events of this day–long festival included a Keynote Lecture on “The Relevance of Translation: The Context of India” by Prof B Mangalam from Aryabhata College, followed by ‘Paper Presentation’ and ‘Introduction of an Indian Text’ competitions.

DEPARTMENT OF HINDI

दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स के हिंदी विभाग द्वारा इस सत्र में विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु कई कार्यक्रमों का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न साहित्यिक हस्तियों से मिलने का अवसर प्रदान करना था।

इन कार्यक्रमों के अंतर्गत

हिंदी विभाग, दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स और महाकवि जयशंकर प्रसाद फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में 'रचनात्मक लेखन' विषय पर पांच दिवसीय ई-कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें हिंदी कविता, कहानी, नाटक, आलोचना और सोशल मीडिया पर विस्तृत परिचर्चा हुई। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में महाकवि जयशंकर प्रसाद फाउंडेशन की अध्यक्ष एवं प्राचार्या हंसराज कॉलेज प्रो.रमा, मुख्य अतिथि के रूप में हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अनिल राय, मुख्य वक्ता सुप्रसिद्ध कवि एवं पूर्व प्राचार्य मोतीलाल नेहरू कॉलेज के डॉ दिविक रमेश जी तथा अन्य दिनों के कार्यक्रम में जाने माने कथाकार एवं जामिया मिलिया इस्लामिया के प्रोफेसर अजय नावरिया, प्रसिद्ध रंगकर्मी सुश्री विभा रानी, हिंदी विभाग जे.एन. यू. की प्रो. पूनम सिंह, सुप्रसिद्ध आलोचक एवं विभागाध्यक्ष मुम्बई विश्वविद्यालय के प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय आदि वक्ताओं ने अपनी बात रखी। विद्यार्थियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक डॉ सुजीत कुमार थे। संयोजक डॉ के एल ढींगरा ने कार्यक्रम का संचालन और संयोजन अपने चिरपरिचित अंदाज में बखूबी किया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर भी 'सांझी सांस्कृतिक विरासत और हिंदी साहित्य' विषय पर हिंदी विभाग, दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स द्वारा वेबिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो स्योराज सिंह बेचैन, अध्यक्ष हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि जब तक सामाजिक समरसता और सामाजिक न्याय (जाति आधारित शोषण) नहीं विकसित होता तब तक सांझी संस्कृति का कोई अर्थ नहीं है। कार्यक्रम का संयोजन विभाग प्रभारी डॉ सुजीत कुमार और संचालन डॉ रश्मि रावत ने किया।

इसी प्रकार, मातृभाषा दिवस के अवसर पर हिन्दी विभाग, दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स द्वारा 'मातृभाषा हिंदी: चुनौतियाँ एवं संभावनाएं' विषय पर एकल व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्रो. अनिल राय मुख्य वक्ता थे। प्रो. राय ने मातृभाषा को बहुत ही व्यापक संदर्भ में बताते उसके महत्व को रेखांकित किया। कार्यक्रम की रूपरेखा विभाग प्रभारी, डॉ सुजीत कुमार द्वारा तैयार की गई थी तथा संचालन तृतीय वर्ष की छात्रा शिवी सिंह ने किया था।

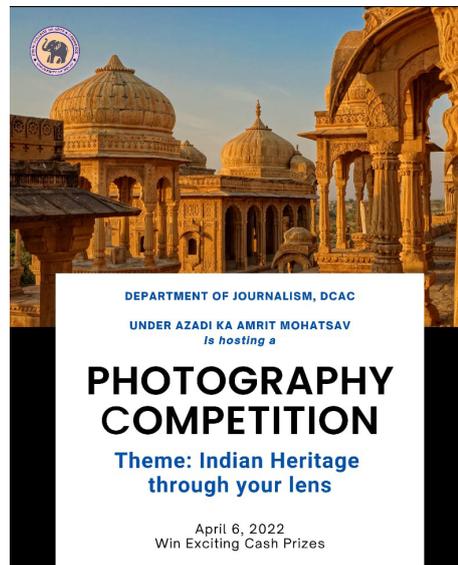
DEPARTMENT OF HISTORY



The Department of History celebrated Azadi Ka Amrit Mahotsav throughout the year by organizing several activities including Webinars, research-based presentations by students, various competitions, and Lectures by Alumni. The department also organised a number of lectures throughout the year like “Do Nights Have a history?” by Dr. Arun Kumar on 29 July 2021, “The Legacy of Freedom and Partition” by Prof. Sucheta Mahajan on 11th August 2021 as a part of ‘Azadi ka Amrit Mahotsav’, “From Traditional to Contemporary: Journey of Mithila Art” by Manisha Jha on 28th October 2021, “Neolithic Cultures of the Indian Subcontinent” by Prof. Ravi Korisettaron on 16 November 2021, “Dalit Movements in Bengal Before and After Independence” by Prof. Sekhar Bandyopadhyay on 9th February 2022, and “Nature, Capital and Imperialism: South Asian Contexts” by Dr. Vasudha Pande on 18th February 2022.

On the occasion of Independence Day, a quiz competition was held on the theme of independence struggle and celebration of 75 years of Indian independence. The department organized “Back to the Campus: An Alumni Lecture Series” which was an initiative of the department to forge close ties of studying students with their Alumni and to learn from their scholarship and lived experiences. The department organized Terra Incognita: The Annual Paper Presentation Event on the 12th of March 2022. The annual departmental festival titled “Darohar” was organized on the 12th and 13th of April 2022 in which the department arranged two lectures and an exhibition on the theme of ‘Art and Resistance’. The department organized various competitions like the conventional debate competition on 12 April 2022, the Photography competition, Pratibha’22: The Annual Departmental Quiz Competition, and the Open Mic Competition.

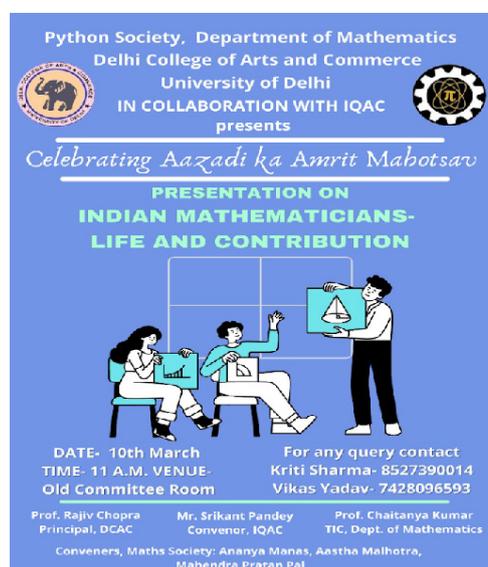
DEPARTMENT OF JOURNALISM



The Department of Journalism strived to realize the premier goals of excellence and knowledge by providing our students with the interface between the media industry and academics through inputs from eminent media personalities and renowned journalists. In this direction, it organized various events such as an interactive webinar with journalist, Andrew Otis, the University of Maryland, where he spoke about his book, Hicky's Bengal Gazette and the Indian freedom movement on 10th September 2021. An interactive webinar with Mr. J. Sai Deepak to speak on his book "India That Is Bharat" on September 15, 2021. The Department organized a two-hours online workshop on "Fake News and Fact Verification" on 17th September 2021. It was conducted by Mr. Nimish Kapoor, Senior Scientist & Head, Science Films Division, Publications Division, and India Science Wire, Vigyan Prasar, Government of India. A "Slogan writing competition" along with IQAC took place on 30th October 2021 on the following English Theme: "Where the mind is without fear...". A Hindi theme was also given. The Department organized its annual festival "SCOOP" in the virtual mode on 4th February 2022 in which they launched Critique, the annual newspaper online. The festival opened with a webinar on "Free Speech in the Context of Sedition: How Colonial-Era Law Impedes a Free Press" by Ms. Smita Sharma, senior independent journalist. This was followed by the second webinar on "Scope of Alternative Election Campaigning During Pandemic" which was delivered by award-winning veteran television journalist, media executive, and political analyst Mr. Umesh Upadhyay. The 5th Sumegha Gulati Memorial Debate was the third event of the day, sponsored by Mrs. and Mr. Jai Kishan Gulati and the final event was Ad-Libs, an advertisement-making competition. The festival witnessed the enthusiastic participation of students. Moreover, an interactive webinar on the theme of Post-Covid World: "Why Multimedia Journalism is the Future?" was conducted on 15th February 2022. The department organized a "Poster-making" competition on the theme, "The Patriot's Blood in the Seed for True Freedom" with IQAC on 9th March 2022. Photography competition on the theme "Indian Heritage through your Lens" along with IQAC on April 6, 2022.

DEPARTMENT OF MATHEMATICS

The Department of Mathematics, in collaboration with the IQAC, organized a number of events/activities as part of the celebrations of “Aazadi ka Amrit Mahotsav”. The “Poster Making” event was organized on 7th July 2021. The “Article Writing” event was organized in collaboration with the Department of Computer Science, DCAC, on 11th July 2021. The Python Society, Department of Mathematics organized an inter-college “Essay Writing” Competition on 23rd October 2021. Students from various colleges submitted their essays on the topic “Indian Mathematics – From Zero to Infinity”. The first three positions were awarded cash prizes and the top five participants were given e-certificates. The Python Society, Department of Mathematics, DCAC, organized a “Presentation Competition” on the topic “Indian mathematicians: Life and Contribution” on 10th March 2022.



DEPARTMENT OF SPANISH

The Department of Spanish organized a few engaging events during the academic year 2021–2022. These were part of the celebrations of Azadi ka Amrit Mahotsav. The webinar titled “Prospering Indo–Argentine relations since the Independence of India” was organized on the 12th of October 2021. The Speaker was H.E. the Ambassador of the Argentine Republic, Mr. Hugo Javier Gobbi. The webinar titled “The Presence of yoga in Spain: The healing power from India” was conducted on the 3rd of February 2022. The Speaker was Ms. Swati Kain: a yoga teacher in Valencia, Spain, and a writer and producer of yoga and yoga videos respectively. The poem recitation event was held on 25th February 2022, where students presented the self-composed poems in Spanish with their English translation. The topic for the competition was “Heroes de nuestra lucha por la Libertad” (Heroes of our Freedom Struggle).

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE



The Department of Political Science organized many online lectures and webinars throughout the year. Some of them are – a lecture on “Issues and Challenges in the Indian Bureaucracy” by Mr. Yashovardhan Azad (Retired Indian Police Services) on 24th September 2021, a webinar on “A Journey from an Aspirant to LBSNAA” by Mr. Jitin Yadav, Joint Secretary, Mass Education Extension and Library Service Department, Government of West Bengal on 12th December 2021, webinar on “The Ukrainian Crisis: Signs of A New Cold War?” by Dr. Amitabh Singh, Associate Professor, Centre for Russian & Central Asian Studies, School of International Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi On 15th February 2022, and a webinar on “Causes and Consequences of Ukraine War” on by Prof. Chintamani Mahapatra, Centre for Canadian, US & Latin American Studies, SIS, JNU, New Delhi 9th March 2022.

The department organised an online inter-college essay writing competition to celebrate the ‘Azaadi ka Amrit Mahotsav’ on “India Emerging as a Global Power”. The department also released the first issue of its bimonthly newsletter *Conciencia* on 17th January 2022. An Intra-department Sports Day was also organised by the department on 13th April 2022 in which students participated in the competitions like Cricket, Volleyball and Tug of War.

NSS



The NSS unit of the college along with approximately 100 volunteers worked enthusiastically throughout the year. It undertook four main projects – Project Tanzeal, Project Clean and Green, Project Arts and Crafts and Project Sensitization. A Project Sensitization also celebrated the Month of Pride, World Population Day and World Youth Skill Day in the month of July. On 1 July 2021, the NSS Unit celebrated “Doctors Day” by gifting a plant to the doctors in the neighbourhood to express the gratitude to them. The volunteers also paid tribute to Anandibai Gopalrao Joshi, the first woman doctor in India. Kargil Diwas was also celebrated with enthusiasm by the volunteers. In August, as part of “Azadi ka Amrit Mahotsav”, various competitions were organized at All-India level. Week-long celebrations were held by Project Clean and Green through posters that created awareness on how to celebrate Independence Day in an eco-friendly manner. A campaign was also carried out to celebrate the contribution of art and literature to the national movement. On 31 August 2021, a webinar was organized on the theme of “Leadership and Creativity” by Vriti Bajaj founder of Heart2art and an internationally certified career coach. On the occasion of Gandhi Jayanti, a quiz competition and a webinar, on the topic “Majbhooti ka Naam Mahatma Gandhi” was organized for the volunteers and the children from the neighbourhood. As part of the “Fit India Movement”, a session on Fusion was organized with Megha Kishor on 9 October 2021. “Vigilance Awareness Week” was celebrated from 26 October to 1 November 2021 wherein the volunteers took a pledge to uphold the highest standards of ethical conduct of honesty and integrity. The Unit also organised a webinar on Sardar Vallabh Bhai Patel to celebrate “Ekta Diwas”. “Parakram Diwas” was celebrated on 23 January 2022 and National Girl Child Day was celebrated on 24 January 2021. On the occasion of Republic Day, a poster-making competition was organized at an All-India level on the themes of “Your Vision of India in 2050”, “The Beauty of our Republic Day Parade”, and “The Fundamental Rights of our Constitution”. A lecture was also delivered by Vishalji (Etah District campaigner) to celebrate Republic Day of India. In the month of February, a talk was organized on Thalassemia and Blood Donation in collaboration with Sattvika Shri Hari Ram Foundation. On Martyrs Day, NSS volunteers paid homage to unsung heroes of our nation and took a pledge against drug abuse, addiction and corruption. During the course of the year volunteers also carried out activities under the schemes Poshan Pakhwada and Swachata Pakhwada. The Annual NSS Festival Aadya was celebrated on 11-12 April 2021. A number of activities like Blood Donation Camp, Seminar with Nest man, a talent show for Tanzeal kids, Nukkad Natak and a Webinar on Health and Wellness were organised by the Unit. Volunteers also participated in yoga day celebrations organized by the university. International Yoga day was celebrated in the college over two days, 20-21 June 2022. On June 20, NSS volunteers performed different yoga asanas with the children from the neighbourhood area and aware them of various benefits of Yoga. On 21st June, the International Yoga Day was celebrated by organising an hour-long workshop for students, teaching and non-teaching staff of the college with Deepti Jain from Yogologue.

NCC



The NSS unit of the college along with approximately 100 volunteers worked enthusiastically throughout the year. It undertook four main projects □ Project Tanzeal, Project Clean and Green, Project Arts and Crafts and Project Sensitization. A Project Sensitization also celebrated the Month of Pride, World Population Day and World Youth Skill Day in the month of July. On 1 July 2021, the NSS Unit celebrated “Doctors Day” by gifting a plant to the doctors in the neighbourhood to express the gratitude to them. The volunteers also paid tribute to Anandibai Gopalrao Joshi, the first woman doctor in India. Kargil Diwas was also celebrated with enthusiasm by the volunteers. In August, as part of “Azadi ka Amrit Mahotsav”, various competitions were organized at All-India level. Week-long celebrations were held by Project Clean and Green through posters that created awareness on how to celebrate Independence Day in an eco-friendly manner. A campaign was also carried out to celebrate the contribution of art and literature to the national movement. On 31 August 2021, a webinar was organized on the theme of “Leadership and Creativity” by Vriti Bajaj founder of Heart2art and an internationally certified career coach. On the occasion of Gandhi Jayanti, a quiz competition and a webinar, on the topic “Majbhooti ka Naam Mahatma Gandhi” was organized for the volunteers and the children from the neighbourhood. As part of the “Fit India Movement”, a session on Fusion was organized with Megha Kishor on 9 October 2021. “Vigilance Awareness Week” was celebrated from 26 October to 1 November 2021 wherein the volunteers took a pledge to uphold the highest standards of ethical conduct of honesty and integrity. The Unit also organised a webinar on Sardar Vallabh Bhai Patel to celebrate “Ekta Diwas”. “Parakram Diwas” was celebrated on 23 January 2022 and National Girl Child Day was celebrated on 24 January 2021. On the occasion of Republic Day, a poster-making competition was organized at an All-India level on the themes of “Your Vision of India in 2050”, “The Beauty of our Republic Day Parade”, and “The Fundamental Rights of our Constitution”. A lecture was also delivered by Vishalji (Etah District campaigner) to celebrate Republic Day of India. In the month of February, a talk was organized on Thalassaemia and Blood Donation in collaboration with Sattvika Shri Hari Ram Foundation. On Martyrs Day, NSS volunteers paid homage to unsung heroes of our nation and took a pledge against drug abuse, addiction and corruption. During the course of the year volunteers also carried out activities under the schemes Poshan Pakhwada and Swachata Pakhwada. The Annual NSS Festival Aadya was celebrated on 11-12 April 2021. A number of activities like Blood Donation Camp, Seminar with Nest man, a talent show for Tanzeal kids, Nukkad Natak and a Webinar on Health and Wellness were organised by the Unit. Volunteers also participated in yoga day celebrations organized by the university. International Yoga day was celebrated in the college over two days, 20-21 June 2022. On June 20, NSS volunteers performed different yoga asanas with the children from the neighbourhood area and made them aware of various benefits of Yoga.

On 21st June, the International Yoga Day was celebrated by organising an hour-long workshop for students, teaching and non-teaching staff of the college with Deepti Jain from Yogologue.

INTERNAL COMPLAINTS COMMITTEE, GENDER SENSITISATION COMMITTEE AND WOMEN DEVELOPMENT CELL

The Internal Complaints Committee in collaboration with VANGATI, Commerce Association and IQAC organized a webinar by Dr, Rajuben L. Desai, member of National Commission for Women on 'Sexual Harassment at Workplace' on 17 August 2021. A Lecture on "Comparative analysis of feminity with special reference to Japan" by Mr Dalel Singh, former Director India Trade Promotion Organization was organised on 10 September 2021. An Online Orientation Programme was held on 30 November on "Sexual Harassment in College and Gender Sensitive Issues and Challenges " by Advocate Sunil Kumar Chaturvedi. On the occasion of International Women's Day on 8 March 2022 an Intra college Poetry and Poster making competition were held on themes: women's harassment, empowerment, safety, leadership and changing roles of women. A lecture by Dr Sudha Singh on women empowerment was organised on 11 March 2022 and a talk on eye awareness was organised with the help of Sharp Sight Hospitals on 23 March 2022.

SKILL DEVELOPMENT COMMITTEE

The Skill Development Committee was constituted on 17th August 2021 under the guidance of our Principal, Prof. Rajiv Chopra. It caters to the inculcation and enhancement of the skills of the students of Delhi College of Arts & Commerce. The Committee focuses on the development of both hard and soft skills and aims to impart these through workshops, activities, field trips, and interactive sessions. During the pandemic year, the committee conducted a series of online webinars on various aspects of skill development. Some of the webinars were "Communication & Employability Skills" by Mr. Vinod David (Corporate Trainer, Skilling India) on 11 September 2021, "Campus to Corporate" by Mr. Priyank Ahuja (Product Manager, Accenture) on 24 September 2021, "Total Quality Person" by Dr. C V Ramanan (Director, IMM Business School, Professor & Life Coach, Spiritual Sadhak) on 7 October 2021, "Why & How Practising Managers Use Microsoft Excel in their Day-to-Day Work" by Mr. Ratan Prasad (Varsity, B. Tech, IIT Kharagpur, CFA, and FRM) on 25 October 2021, "COVID-19 and Positive Thinking: Practising Mindfulness" Ms. Girija Shridhar (Master Trainer, NSDC) on 12 November 2021, and "Interviewing Skills for Success" by Ms. Nidhi Thomas on 25 November 2021. A series of other webinars on the topic "Role of the Subconscious Mind in the Enhancement of Skills", "Stress Management Through Artistic Skills and Tools", and "Content Creation and Skill Enhancement", "Artificial Intelligence" were also conducted by the committee. An online survey was conducted in April 2022 to gauge the skills- physical, mental, and emotional, required for the holistic development of the students via a google form. A workshop on "Photography" was conducted on 17 June 2022 in the multi-purpose hall of the college.

ENACTUS



Students studying in our refurbished Taaleem Centre at Shaheen Bagh

Enactus aims to uplift the marginalised communities through the power of social entrepreneurship. Staying true to our core philosophy, Enactus DCAC worked on 3 such projects in this past one year, namely Project Taaleem, Project Saahas and Project Zaraat. The highlight of the year was launching a new project on ground, Project Zaraat, despite the current ongoing pandemic. This has helped us reach a milestone of 7 projects undertaken and numerous lives sustained.

Project Taaleem – Aim to revolutionise the lives of the refugee children by imparting primary education through a community driven model where the teachers are identified from within the community itself. The Knowledge Partner Katha trains and certifies these teachers. The project began with two centres in Shram Vihar and Shaheen Bagh. A number has now grown to a staggering figure of 650 students and 8 centres across Delhi NCR through collaborations with various NGOs like Vidya NGO, Gali Pathshala, Human Welfare Council and Ujaala.

The project became more scalable this year through Taaleem portal. Children can now access and watch pre-recorded, interactive modules developed on the lines of ASBL. Further leveraging on the experience of our partner– UNESCO, Social Emotional Learning (SEL) has been inculcated in our curriculum under Taaleem. Not letting the pandemic get into the way of refugee education, Enactus DCAC conducted a PAN India Gadget Drive in the month of January. We reached out to people across the country and collected close to 150 gadgets, enabling as many children to access learning opportunities.

Project Saahas – Under this project, a cotton-based breast prosthesis made of recyclable cotton is fabricated and is sold under the brand name Canfem. It has proved ideal for cancer survivors since it provides the perfect shape and body weight to the patient and is better than alternatives available in the market. Canfem has been approved by AIIMS and Tata Memorial who are willing to sell it. Hospitals like Apollo Hospital, BL Kapoor and Max Hospital have also been selling our products.

The project also collaborated with brands like Zivame and Clovia who have become our channel partners.

Members of Enactus DCAC also participated in more than 30 Business Plan Competitions in this tenure organised by renowned colleges like IIT Roorkee, IIT Delhi, IIM Kozhikode, Jai Hind College, and won major positions along with prize money in the same.

Project Zaraat is Enactus DCAC's latest project which aims to minimise post-harvest losses by equipping the farming community with affordable, portable and eco-friendly storage solutions. Zaraat further enhances the forward linkages and provides the farmers with an income boost by tying up with B2B organisations. The members of the project had successful meetings with companies such as Crofarm, Zomato Hyperpure, Farmer's Family for the same while also receiving mentorship sessions from Indian Agricultural Research Institute and Michigan State University. The project is looking into expanding into more communities via our collaboration with a Farmer Producer Organisation and innovate in the areas of organic farming, agro-processing etc. It has proven immensely successful even in its short duration of operations. The project was awarded as the special mention in the Enactus Early-Stage National Competition 2021 held in August and is the recipient of the KPMG Business Ethics Grant 2021.

PLACEMENT CELL

The Placement Cell of the college stands committed and dedicated to providing the students of Delhi College of Arts and Commerce a thriving platform to engage with leading multinationals in the corporate world and major organisations in the social sphere.

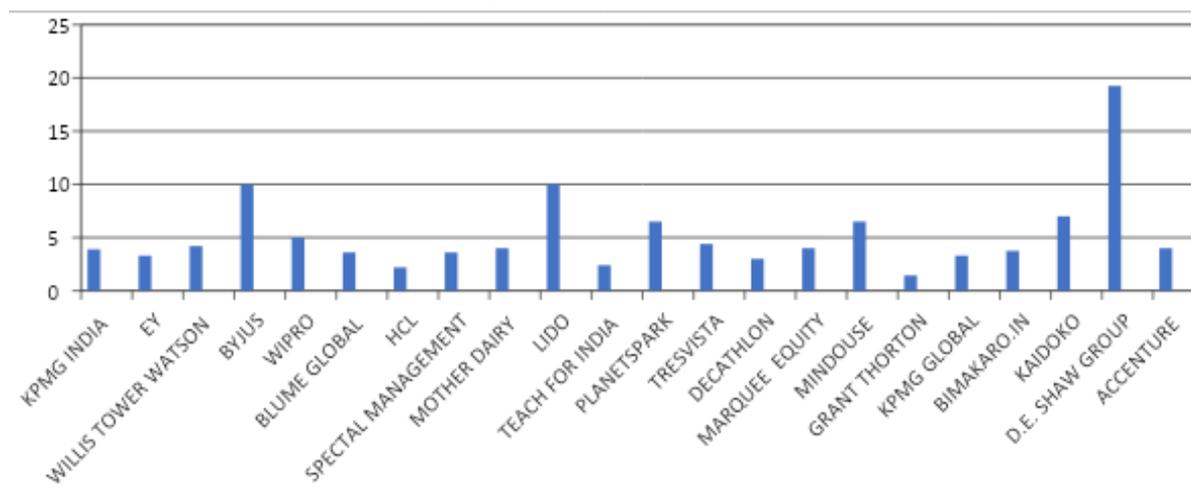
In the light of rising concerns about the COVID-19 spread, many companies have put on hold their placement process which affected the cycle of recruitments and led to a statistical dip in the placements. However, the placement cell continued to persevere and achieved new heights of excellence in the academic year 2020-21.

Being active throughout the year, student representatives and teachers who are a part of this cell managed to collaborate with more than 40 companies to get over 85 students placed with offers extended from Global firms like EY, KPMG, Wipro, TresVista, Willis Tower Watson in a plethora of job profiles including Finance, Accounting, Sales, Content Writing, Research and Audit.

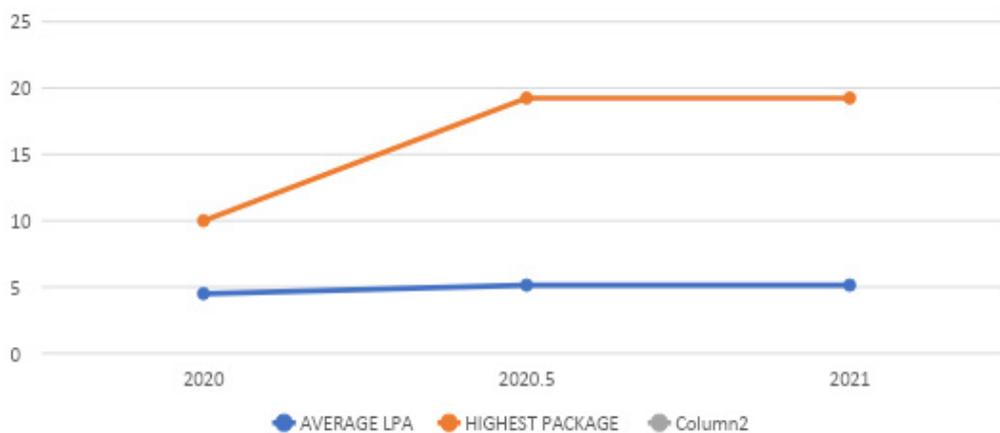
In this session, a massive 10+ internship offers were made by top organisations to the students of our college. Some of the key companies who hired students of DCAC as interns include White Hat Jr, The Outlook group, Josh Talks, and Zee Media among others.

Informative and career building seminars were organised by the Placement Cell in this session by reputed organisations like CV Owl, which focused on the importance of an impressive CV. Another such seminar was conducted for the Civil Services aspirants which highlighted the experiences and opportunities shared by our guest speaker and honourable IAS officer, Mr. Varun Ranjan. A practice aptitude test was also conducted by Prep Junction for the students.

Companies and Compensation Offered



COMPENSATION GROWTH TRAJECTORY



5.14 LPA Average compensation offered to students in 2021-22

PHOTOGRAPHY





OROJ ZEHRA
B.Sc (HONS) ZOOLOGY



AYUSHI ARORA
B.COM (HONS)



GURSAHIB BATRA
B.A. (PROG)



DEVANSH SHARMA
B.A. (PROG)



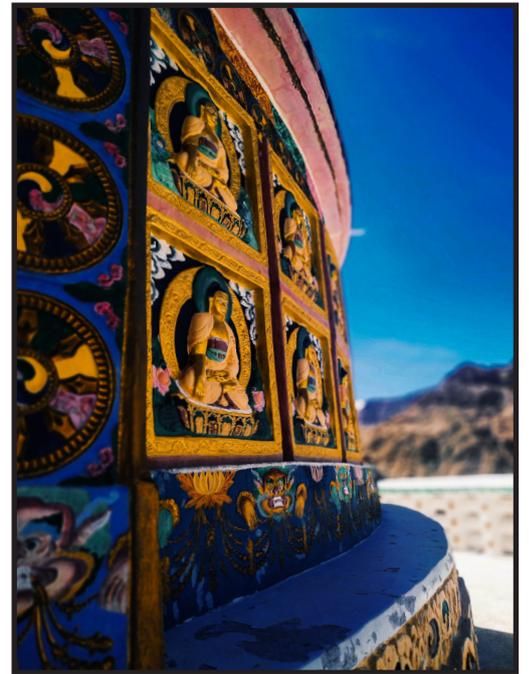
RITWIK GUGNANI
B.A. (HONS) JOURNALISM



URGAIN
B.A. (PROG)



TANMAY TIWARI
B.A. (HONS) JOURNALISM



PADMA CHONZOM
B.COM. (PROG)



SANJAY SINGH
B.A. (HONS) JOURNALISM



KHUSHBOO
B.A. (HONS) ENGLISH



LAVANYA
B.A. (PROG)



NAINIKA YADAV
B.A. (HONS) POLITICAL SCIENCE



KHUSHI
B.A. (HONS) JOURNALISM



KRITIKA
B.A. (HONS)
ECONOMICS

OFFICE BEARERS 2021 – 2022

DEPARTMENT OF JOURNALISM

Khushi Vats – President
Himanshi Aggarwal – Vice-president
Shivam Sharma – General Secretary

DEPARTMENT OF HISTORY

Executive Committee:

Sourav Bhattacharya
Shagnick Bhattacharya
Soham Chakraborty
Tejaswi Singh
Pratyush Mallick
Khushi Singh
Mohit Singh
Ujjwal Sankhla
Sarbhak Sharma
Soumya Gupta
Shashank Rawat

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

Vinti Mittal – President
Suman Kumar Saha – General Secretary
Hitesh Kumar – Vice President
Vandana Chaubey – Treasurer

ENGLISH LITERARY ASSOCIATION DEPARTMENT OF ENGLISH

Swati Thakur – President
Deepti Chauhan – General Secretary
Titlee Sen – Treasurer
Yashika Gera – Graphics head
Simran – Logistics head
Rajat Kumar – Hosting member
Gunjan Saini – Hosting member
Vallika Shukla – Logistics Member
Nidhi Rahangdale – PR and Marketing head

VANGATI – The COMMERCE ASSOCIATION

Khushi Garg – President
Sudhir Wadhawan – Vice-president
Sanya Gandhi – General Secretary
Tushar Arora – Sponsorship Head
Deepshikha – Editor-in-chief
Sasmit Sinha, Chitrananu – Associate Editors
Harsh Agarwal – Content Head
Jessica Arora – Technical Head
Shruti Batra, Divyangna Chowdhury – PR Heads
Ananya Jain – Promotion Head
Srijal Chaudhary – Creative Head
Padma Chonzom – Photography Head
Kartik Agarwal, Divyanshi Shridhar – Administrative Heads

PYTHON, THE MATHS ASSOCIATION

Harshit Sehrawat – President
Vikas Yadav – Vice President
Kriti Sharma – Treasurer
Shubhendu Pandey – Secretary

NSS

Ramneek Jain – President
Gursahib Singh Batra – Vice-president
Geetanshika Verma – General Secretary
Purab Gandhar – Treasurer

LEHER, THE DRAMATICS SOCIETY

Raghav Mathur – Head of the society
Aarzo Arora – Head of the society
Mahesh – Core member
Akanksha Bonthiyal – Core member
Aprajita Rajpoot – Core member

DASTGAH, THE MUSIC SOCIETY

Sanyukti Chowdry – President
 Abhinandan Raina – Vice-president
 Hetul Katyul – General Secretary
 Maanav Verma – Indian Head
 Limasanen Aonok – Western Head
 Titlee Sen – Western Head

PRAKRITI, THE ENVIRONMENT SOCIETY

Tejaswi Singh – President
 Arushi Bansal – Secretary General
 Nidhi Rahangdale – PR Head
 Soumya Gupta – Editorial Head
 Jatin Sethi – Treasurer
 Samriddhi Kindra – Head of Volunteers
 Khushi Ahuja – Events Head
 Riddhi Gupta – Head of Research

ENGLISH DEBATING SOCIETY

Executive Council:
 Tulika Karmakar
 Shruti Pathak
 Gunjan Saini
 Aryan Yadav
 Kathan Parmar

VIVAKSHA HINDI DEBATING SOCIETY

Executive Board:
 Khushi Vats
 Devansh Tiwari
 Pratham Yambur

CLICKS, THE PHOTOGRAPHY SOCIETY

Gursahib Singh Batra – President
 Saumya Agrawal – Vice-president
 Shreya Bhadani – General Secretary
 Devansh Sharma – Treasurer

MAKTUB, THE POETRY SOCIETY

Punya – President
 Akрати – Vice-president
 Aryan Yadav – General Secretary
 Denmit Lepcha – Core Team Member
 Sejal Arora – Core Team Member

VYAPAAR, ENTREPRENEURSHIP CELL

Vedansh Goyal – President
 Adya Jauhari – Vice-president
 Dakshesh Chawla, Garima Malhotra – Incubation Heads
 D Janani – Finance Heads
 Sairah Gaur, Aadya Nair – Marketing Head
 Shashank Pandey – Media & Tech Head
 Ritwik Paul, Aayushi Jain – Managers

ADROIT THE ADVERTISEMENT SOCIETY

Aditya Tripathi President
 Shivangi Agrawal Vice-president
 Trivikram Mayank Kasturi – Vice-president
 Konark Sama – Vice-president
 Vivek Nain – Executive
 Chitwan Jain – Executive
 Ankit Soni – Executive
 Bhavya Agrawal – Executive
 Sejal Duggal – Executive
 Vaishali Baid – Head of Administration Department
 Tanisha Kapoor – Head of Editorial Department
 Bhavya Kapoor – Head of Finance Department
 Gourvit Arora – Head of Marketing Department
 Priyanshu Jain – Head of Social Media Department
 Harsh Joshi – Head of Technical Department

PLACEMENT CELL 2021–22

Trivikram Mayank Kasturi – President
 Janvi Sachdeva – Vice-president
 Shruti Jain – Vice-president
 Aryan Singh Dalal – Corporate Relations Head
 Navya Lamba, Krishi Agarwal – Internship Head
 Shivangi Jamwal – Student engagement and Social Media
 Ankit Sardana – Training and development, Alumni relations

ENACTUS DCAC

Sanyam Jain – President
 Sankar V Murali – Director of Strategy and Innovation
 Pavani Miglani – Head of Research and Development
 Akshat Bahuguna – General Secretary
 Amulya Aggarwal – Project Head – Zaraat
 Chetna Gupta – Head of Human Resource
 Sanya Vij – Head of Public Relations
 Yashika Chandel – Media and Outreach Head
 Allina Tiwari – Head of Operations
 Vaibhav Sukhani – Head of Ground Mobilization
 Sanidhya – Head of Ground Mobilization
 Maanav Verma – Executive Member
 Aviral Saran – Executive Membe

DRIFTUP, THE DANCE SOCIETY

Shashank Rawat – President
 Korisha Tandon – Vice-president
 Shatakshi Pachauri – General Secretary

FRIDAY SCHOOL OF ECONOMICS

Executive Board:
 Riddhi Gupta
 Ishika Bansal
 Sarthak Rastogi

STYLUS, THE FASHION SOCIETY

Vanshika Dhameja – President
 Ananya Agarwal – Vice-president

EDITORIAL TEAM



Left To Right: Dr. Sarthak Gupta, Dr. Rashmi Rawat, Dr. Bijiya Thakur, Dr. Vinita G. Chaturvedi, Dr. Smita Banerjee, Prof. Neeru Kapoor, Dr. Neelam Yadav (Convener), Prof. Shalini Saksena & Dr. Rittvika Singh



SEJAL ARORA
COMPILER & EDITOR
B.A. (HONS) ENGLISH
2ND YEAR



ASTITVA BAJAJ
DESIGNER
B.A. (PROG) ACCOUNTING AND
FINANCE + COMPUTER APPLICATIONS
2ND YEAR



VAIBHAV GOSWAMI
DESIGNER
B.SC. (HONS) COMPUTER SCIENCE
2ND YEAR



OINDRILA GHOSH
MEMBER
B.A. (HONS) POLITICAL SCIENCE
2ND YEAR



TEJASWI SINGH
MEMBER
B.A. (HONS) HISTORY
2ND YEAR



JASHANDEEP BANSAL
MEMBER
B.A. (PROG) ECONOMICS + MATHS
2ND YEAR



ADITYA SINGH
MEMBER
B.COM. (HONS)
2ND YEAR



SANYAM JAIN
MEMBER
B.A. (HONS) ECONOMICS
2ND YEAR



AMOLA SHRIVASTAVA
MEMBER
B.A. (HONS) ENGLISH
2ND YEAR



PUNYA
MEMBER
B.A. (HONS) JOURNALISM
2ND YEAR



SHAGNICK BHATTACHARYA
MEMBER
B.A. (HONS) HISTORY
2ND YEAR



GUNJAN SAINI
MEMBER
B.A. (HONS) ENGLISH
2ND YEAR



HITESH KUMAR
MEMBER
B.A. (HONS) POLITICAL SCIENCE
2ND YEAR

CALL FOR WRITE-UPS

Your compositions (Poems/Articles/Stories/Art Works/Translations etc.) are invited for the academic year 2022-23:

1. The compositions must be original and unpublished. All compositions will be checked for plagiarism.
2. The submissions should be emailed along with the name, course and year of the contributor to the following email address – dcacswaram.mag@gmail.com. Original pictures/photos taken by the contributor can be posted with the content. Acknowledged Common Property images can also be used.
3. The writings for submission should be in Hindi, English or any regional language. Original short pieces in any regional or foreign language with English translation are also welcomed.
4. Only the typed version –Times New Roman (English) and Unicode Mangal (Hindi), Font 12 – will be accepted.
5. In case of any queries, contact us through the above-mentioned email address. You may also contact the Magazine Committee members.

Dr. Neelam Yadav, Dr. Vinita G. Chaturvedi, Dr. Smita Banerjee, Prof Shalini Saxsena, Prof. D.A.P. Sharma, Dr. Sanjeeb Kumar, Prof. Neeru Kapoor, Dr. Bijiya Thakur, Dr. Rittvika Singh, Dr. Rashmi Rawat, Mr. Sarthak Gupta

Looking forward to your contributions

Editorial Board

Swaram

अकादमिक वर्ष 2022-23 के लिए रचनाएँ (कविताएँ/आलेख/कहानियाँ/अनुवाद/कलाकृतियाँ) आमंत्रित हैं-

1. रचनाएँ भेजने से पहले सुनिश्चित कर लें कि वे मौलिक और अप्रकाशित हों।
 2. रचनाओं के साथ अपना नाम, कोर्स, कक्षा लिख कर इस ई-मेल आई डी पर भेजें - dcacswaram.mag@gmail.com -रचनाकार द्वारा ली गई मूल तस्वीरें/फोटो सामग्री के साथ भेजी जा सकती हैं। सार्वजनिक इस्तेमाल हेतु स्वीकृत तस्वीरें भी इस्तेमाल की जा सकती हैं।
 3. हिंदी, अंग्रेजी के अलावा क्षेत्रीय भाषा में रचनाएँ भेजी जा सकती हैं। अंग्रेजी अनुवाद के साथ क्षेत्रीय और विदेशी भाषा में भी मौलिक रचनाओं का स्वागत है।
 4. अंग्रेजी की टाइम्स रोमन और हिंदी की मंगल फॉन्ट में टाइप की गई रचनाएँ ही स्वीकार की जाएंगी।
 5. आपकी कोई जिज्ञासा हो तो ऊपर दिए गए मेल पते पर संपर्क करें। पत्रिका समिति के सदस्यों से भी अपनी शंकाओं के समाधान के लिए आप संपर्क कर सकते हैं।
- डॉ नीलम यादव, डॉ विनीता जी. चतुर्वेदी, डॉ स्मिता बैनर्जी, प्रो. शालिनी सक्सेना, प्रो. आनंद प्रकाश शर्मा, डॉ संजीव कुमार, प्रो. नीरू कपूर, डॉ बिजया ठाकुर, डॉ ऋत्वििका सिंह, डॉ रश्मि रावत, डॉ सार्थक गुप्ता

आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी ।

संपादकीय मंडल
स्वरम

SWARAM

2021-22

DELHI COLLEGE OF ARTS & COMMERCE

UNIVERSITY OF DELHI

NETAJI NAGAR

NEW DELHI-110023

INDIA

PHONE No: 011-24109821

FAX No: 011-26882923

EMAIL: PRINCIPALDCAC@GMAIL.COM